APRIL 2022

Monthly Magazine
Year 8 Issue 4

Satyug

नारायण रेकी सतसंग परिवार

In Giving We Believe

सतयुग

NARAYAN REIKI IN GIVING WE BELIEVE

PEACE LOVE RESPECT FAITH CARE HEALTH WEALTH SUCCESS HAPPINESS

IN GIVING WE BELIEVE

हमारा उद्देश्य

"हर इंसान तन, मन, धन व संबंधों से स्वस्थ हो
हर घर में सुख, शांति समृद्धि हो व
हर व्यक्ति उन्नति, प्रगति व सफलता प्राप्त करे।"

बुधवार सतसंग

प्रत्येक बुधवार प्रात ११ वजे से ११.३० वजे तक

फेसबुक लाइव पर

सतसंग में भाग लेने के लिए नारायण रेकी सतसंग परिवार के फेसबुक पेज को ज्वाइन करें और सतसंग का आनंद लें।

स्वर्णिम छः

१- नारायण प्रार्थना : अपने बाएं हाथ की कलाई को अपने दाहिने हाथ से पकड़कर पूरी प्रार्थना कहे। फिर अपने बाएं हाथ में अपना दाहिना हाथ रखें और राम राम २१ (आपने अपने आप को नारायण के हाथ में सौंप दिया)

२- सूर्यकिरण ध्यान : हर रोज सुनहरी सूर्य किरणें जो आपके घर में प्रवेश कर रही हैं उनसे प्रार्थना करें कि घर के प्रत्येक कोने में फैलें और अपने साथ खुशी, आनंद, उत्साह, सुख, शांति, समृद्धि, प्यार, आदर, सम्मान, अच्छी आदतें, स्वस्थ रिश्ते और स्वास्थ्य की संजीवनी ले कर आए। आप किसी भी अन्य विशिष्ट इच्छा की कल्पना कर सकते हैं। घर और परिवार के सदस्यों को सूर्य किरणों से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए कल्पना करें। पांच मिनट तक आँख बंद कर कल्पना करें। राम राम ५६ करें।

३ - लॉकर्स एनरजाइज करना : अपने लॉकर, पर्स आदि को एनरजाइज करें जहां आप अपने पैसे और कीमती सामान रखते हैं। अपने लॉकर या उस स्थान को जहां आप धन रखते हैं, उसमें सभी मूल्यवर्ग के नए नोटों के बंडल + चांदी के सिक्के + गहने और अन्य क़ीमती सामान को विज़ुअलाइज़ करें। फिर उससे बातचीत करते हुए कहे- आप मेरे लिए शुभ हैं।आप मेरे लिए भाग्यशाली हैं, आप में रखे धन की बढ़ोत्तरी होती जाती है। फिर धन को आशीर्वाद दें और कहे -आपसे प्रार्थना है कि जब भी आप किसी के पास जाएं- उनकी आवश्यकताओं को पूरा करके, दूसरे व्यक्ति को बरकत बढ़ोतरी का आशीर्वाद देकर, गुणकों में मेरे पास वापस आ जाएं। अपने लॉकर को आशीर्वाद देते हुए कहो कि मैं आपको प्यार करता हूं, आपको पसंद करता हूँ, आपका सम्मान करता हूं। नारायण ब्लेस्स यू। (I love you.I like you, I respect you ,Narayan bless you.) फिर राम राम ५६ करें। यह समृद्धि को आकर्षित करेगा

४. डाइनिंग टेबल को एनरजाइज़ करना : चो-कू-रे, एलआरएफसी, शांति और लकी सिंबल के साथ अपनी डाइनिंग टेबल को एनर जाइज़ करें । इस आशीर्वाद के साथ कि सभी परिवार के सदस्यों को भोजन के रूप में प्रसाद का आशीष मिल रहा है, जो उन्हें स्वस्थ रखेगा। आप ऐसे भी कह सकते हैं, इस प्रसाद की मदद से शरीर का आदर्श वजन प्राप्त कर लिया है और भोजन संजीवनी / अमृत में परिवर्तित हो जाता है। सभी में बहुत सारा प्यार, सम्मान, देखभाल, विश्वास और समझ भर दो। राम राम ५६ करें आप दोनों ३ और ४ को एक साथ कर सकते हैं । बाएं हाथ पर प्रतीक बनाएं और खाने की मेज और अन्य जगह की कल्पना करें जहां भोजन खाया जाता है। कल्पना करें कि दाएं हाथ की ऊर्जा लॉकर को प्राप्त हो रही है। लॉकर के साथ बातचीत करें जैसा कि चरण ३ में बताया गया है। अगर आप सिंबल नहीं जानते हैं तो बिना उसके भी कर सकते हैं।

५-शांति कलश ध्यान : एक आरामदायक स्थिति और आसन में बैठें। अपनी आंखों को बंद करे और अपनी गोद में हाथों को कप आकार में रखें। ब्रह्मांड में शांति और ऊर्जा से भरे एक सुंदर सुनहरे पॉट (कलश) को विज़ुअलाइज़ करें। इस कलश के साथ संबंध स्थापित करने की कोशिश करें और इससे शांति की ऊर्जा का बहाव अपने क्राउन चक्र पर कल्पना करें जो आपके सिर के ऊपर है। इस प्रक्रिया में कुछ २-३ मिनट लग सकते हैं।फिर निम्नलिखित बयान कहना है

नारायण आपका धन्यवाद है, हमारे भीतर असीम शांति है, असीम शांति है, असीम शांति है।

इस वाक्य को अपनी उंगलियों पर १४ बार दोहराएं और महसूस करें कि यह ऊर्जा आपके सिर से नीचे की ओर बह रही है और कल्पना करें कि शरीर के सभी हिस्सों और कोशिकाओं में भर रही है। यह आपको शांत और शांतिपूर्ण बनाता है।

६. वैल्यू एडिशन : जब भी आप किसी को कुछ भी वस्तु देते हैं .... भोजन, पैसा, उपयोग आने वाली कुछ भी चीज़ या वो चीज दे रहे हैं, जिसकी आपको ज़रूरत नहीं है ... इसे नारायण नारायण कह कर ब्लेस्स करें और मुस्कुराहट के साथ दें।

उन चीजों के लिए जो आप दे रहे हैं क्योंकि उनकी अब और ज़रूरत नहीं है, उन्हें धन्यवाद कहें।

जब आप उनमें मूल्य जोड़ते हैं, तो आप शुभकामनाओं से सक्रिय करते हैं व आप कह सकते हैं, जिसके पास वह जा रही है उस व्यक्ति को आशीर्वाद दे गुणकों में आपके पास वापस आ जाए।

उन चीज़ों के लिए जो आप बहुतायत में वापस चाहते हैं आप- राम राम २१ / राम राम ५६ कर सकते हैं।

।।卐 ।।

पावन वाणी

प्रिय नारायण प्रेमियों,
।। नारायण नारायण ।।

आप सभी को आपके अपने प्रिय online नारायण भवन कि सालगिरह पर हार्दिक शुभकामनाएं ।

नारायण भवन के बारे में, आज मैं आपसे अपने मन कि बात करना चाहती हूँ । जब टीम ने ट्रस्ट के सामने अपना प्रस्ताव रखा, तो नया विचार होने के बावजूद सभी ने हामी भरी और हमेशा कि तरह टीम लग गई अपने काम पर । मेरे मन में यह दृढ़ विश्वास था कि जितना प्यार, दुलार NRSP को मिलता रहा है उसके चलते सफलता निश्चित है । नारायण भवन में शुरू के नौ दिन पूरे हुए तो सतसंगियों कि अपार सहभागिता को देखते हुए यह निर्णय लिया गया कि भवन को हनुमान जयंती तक बढ़ा दिया जाए । हनुमान जयंती तक जब भवन का विस्तार हुआ तो सतसंगियों ने इसे और आगे ५६ दिनों तक करने का अनुरोध किया । जब ५६ दिन पूरे हुए तब तक सतसंगियों का सहयोग और नारायण भवन के सतसंग से होने वाले लाभों को देखते हुए, टीम का और अपने परिवार के सहयोग ने यह विचार दिया कि नारायण भवन को जारी रखा जाए ।

शुरू में यह लगा कहाँ सप्ताह का एक सतसंग कहाँ हर रोज के दो सतसंग सत्र, कैसे होगा ? तभी मन के कोने से आवाज आई अगर बारंबार इस भवन को जारी रखने की डिमांड आ रही है, बार- बार मेरा मन प्रफुल्लित सा इस भवन को जारी रखने का हो रहा है, बार- बार उत्साहित सी टीम नए- नए सुझावों के साथ आ रही है तो यह ही नारायण कि मर्जी है क्योंकि यह जो भवन कार्यशील है बस उसकी मर्जी है ।

ब्रह्म मुहूर्त का सत्र, दोपहर का सत्र सारी जिम्मेदारियों को पूरा करने के साथ- सर्वोत्तम तरीके से निभ रहे हैं । मैं प्रकृति के आगे बार- बार नतमस्तक होती हूँ जिसने इस अच्छे कार्य के लिए मुझे और मेरी टीम को चुना । एक विश्वास बहुत अधिक दृढ़ हुआ कि यदि आप ईमानदारी से, किसी कार्य को करने के लिए अपना १००% देते हैं तो प्रकृति आपको गुणकों में लौटाती है । हम सबके लाडले नारायण भवन का प्रथम जन्मदिन और आने वाले अनंत जन्म दिनों कि आप सभी को हार्दिक बधाई ।

शेष कुशल

R. Modi

-: संपादिका :-

संध्या गुप्ता

09820122502

-: प्रधान कार्यालय :-

राजस्थानी मं डल कार्या लय

बेसमेंट रजनीगं धा बिल्डिं ग, कृ ष्ण वाटिका मार्ग ,

गोकुल धाम, गोरेगां व (ई), मुं बई - ४०० ०६३.

-: क्षेत्रीय कार्यालय :-

अहमदाबाद	जैविनी शाह	:	9712945552
आगरा	अंजनामित्तल	:	9368028590
अकोला	रिया / शोभा अग्रवाल	:	9075322783/ 9423102461
अमरावती	तरुलता अग्रवाल	:	9422855590
बैंगलोर	शुभांगी अग्रवाल	:	9341402211
बैंगलोर	कनिष्का पोद्दार	:	7045589451
बड़ोदा	दीपा अग्रवाल	:	9327784837
भंडारा	गीता शारडा	:	9371323367
भीलवाड़ा	रेखा चौधरी	:	8947036241
बस्ती	पूनम गाड़िया	:	9839582411
भोपाल	रेनूगट्टानी	:	9826377979
बीना (मध्यप्रदेश)	रश्मि हुरकट	:	9425425421
बनारस	अनीता भालोटिया	:	9918388543
दिल्ली (पश्चिम)	रेनू विज	:	9899277422
दिल्ली (पूर्व)	मीनू कौशल	:	9717650598
दिल्ली (प्रीतमपुरा	मेघा गुप्ता	:	9968696600
धुले	कल्पना चौरोडिया	:	9421822478
डिब्रूगढ	निर्मलाकेडिया	:	8454875517
धनबाद	विनीता दुधानी	:	9431160611
देवरिया	ज्योति छापरिया	:	7607004420
गुवाहाटी	सरला लाहौटी	:	9435042637
गुडगाँव	शीतल शर्मा	:	9910997047
गोंदिया	पूजा अग्रवाल	:	9326811588
गाजियाबाद	करुणा अग्रवाल	:	9899026607
गोरखपुर	सविता नांगलिया	:	9807099210
हैदराबाद	स्नेहलता केडिया	:	9247819681
हरियाणा	चन्द्रकला अग्रवाल	:	9992724450
हींगन घाट	शीतल टिबरेवाल	:	9423431068
इंदौर	धनश्री शिरालकर	:	9324799502
इचलकरंजी	जयप्रकाश गोयनका	:	9422043578
जयपुर	सुनीता शर्मा	:	9828405616
जयपुर	प्रीती शर्मा	:	7877339275
जालना	रजनी अग्रवाल	:	8888882666
झुंझुनू	पुष्पा टिबरेवाल	:	9694966254
जलगाँव	कला अग्रवाल	:	9325038277
कानपुर	नीलम अग्रवाल	:	9956359597
खामगांव	प्रदीप गरोदिया	:	8149738686
कोल्हापुर	जयप्रकाश गोयनका	:	9422043578
कोलकत्ता	सी .एसंगीता चांडक	:	9330701290
कोलकत्ता	श्वेता केडिया	:	9831543533
मालेगांव	आरती चौधरी/रेखा गरोडिया		9673519641/ 9595659042
मोरबी (गुजरात)	कल्पना जोशी	:	8469927279
नागपुर	सुधा अग्रवाल	:	9373101818
नांदेड	चंदा काबरा	:	9422415436
नासिक	सुनीता अग्रवाल	:	9892344435
नवलगढ़	ममता सिंगरोडिया	:	9460844144
पिछौरा	स्मिता मुकेश भरतिया	:	9420068183
परतवाडा	राखी अग्रवाल	:	9763263911
पूना	आभा चौधरी	:	9373161261
पटना	अरबिंद कुमार	:	9422126725
पुरुलिया	मृदु राठी	:	9434012619
रायपुर	अदिति अग्रवाल	:	7898588999
रांची	आनंद चौधरी	:	9431115477
रामगढ़	पूर्वी अग्रवाल	:	9661515156
राउरकेला	उमा देवी अग्रवाल	:	9776890000
शोलापुर	सुवर्णा बल्दावा	:	9561414443
सूरत	रंजना गाडिया	:	9328199171
सीकर	सुषमा अक्षवाल	:	9320066700
सिलीगुड़ी	आकांक्षा मुंधडा	:	9564025556
विशाखापत्तनम	मंजू गुप्ता	:	9848936660
उदयपुर	गुणवंती गोयल	:	9223563020
विजयवाड़ा	किरण झंवर	:	9703933740
वर्धा	अन्नपूर्णा	:	9975388399
यवतमाल	वंदना सूचक	:	9325218899

। । 卐 । ।

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

।। नारायण नारायण ।।

पिछले दिनों, वर्चुअल नारायण भवन ने अपना पहला जन्मदिन मनाया। सतसंगियों और भवन टीम का उत्साह देखते ही बनता था। इस पूरे वर्ष भवन से अनेकों सतसंगियों ने अनेकों बातें सीखीं, उन्हें जीवन में उतारा और अपने जीवन को सप्तसितारा बनाया। हमने १०० सतसंगियों और ९ दिनों का लक्ष्य रखा था जो आज लगभग ३० हजार परिवारों और अनंत सतसंग में परिवर्तित हो चुका है।

तो बस टीम सतयुग ने सोच क्यों न अपने सुधि पाठकों, को इस अद्भुत, ऑन लाइन भवन कि कहानी बताई जाए।

बस इस अंक में जाने नारायण भवन कि कहानी।

सप्त सितारा जीवन कि शुभकामनाओं सहित-

आपकी अपनी

संध्या गुप्ता

अंतरर्राष्ट्रीय कार्यालय :

नेपाल	रिचा केडिया	977985-1132261
आस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
बैंकाक	गायत्री अग्रवाल	66897604198
कनाडा	पूजा आनंद	14168547020
दुबई	विमला पोद्दार	971528371106
शारजहा	शिल्पा मांजरे	971501752655
जकार्ता	अपेक्षा जोगनी	9324889800
लन्दन	सी.ए. अक्षता अग्रवाल	447828015548
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
डबलिनओहियो अमेरिका	स्नेह नारायण अग्रवाल	1-614-787-3341

आपके विचार सकारात्मक सोच पर आधारित आपके लेख, काव्य संग्रह आमंत्रित है - सतयुग को साकार करने के लिये/आपके विचार हमारे लिये मूल्यवान हैं। आप हमारी कोशिश को आगे बढ़ाने में हमारी मदद कर सकते है। अपने विचार उदगार, काव्य लेखन हमें पत्र द्वारा, ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं।

हमारा ई-मेल है 2014satyug@gmail.com

we are on net

narayanreikisatsangparivar @narayanreiki

प्रकाशक : नारायण रेकी सतसंग परिवार

मुद्रक : श्रीरंग प्रिन्टर्स प्रा. लि. मुंबई.

Call : 022-67847777

||नारायण नारायण||

सतयुग का शंखनाद

राज दीदी कहती हैं आप जैसा सोचते विचारते हैं, जिन शब्दों का प्रयोग करते हैं आपका जीवन वैसा ही बनता जाता है। दीदी के इस सिद्धांत को स्थापित करता है हमारा वर्चुअल नारायण भवन।

एक विचार जन्मा, पनपा और जिसने बहुत तेजी से अपनी जड़ें जमाईं और तेजी से सतसंगियों के दिलों में जगह बनाता हुआ नारायण भवन विश्व भर के लोगों के दिल में जगह बनाता हुआ आज अपने जीवन के प्रथम पायदान, प्रथम जन्मदिवस को अभी हाल में ही १३ अप्रैल को मना चुका है।

कहानी बहुत ही रोचक है। लॉक डाउन का समय था। जगह- जगह प्रार्थनाएं हो रही थीं। ऐसे में किसी व्यक्ति विशेष के लिए की गईं प्रार्थनाओं ने अपना असर दिखाया तो टीम के मन में ख्याल आया कि यदि NRSP के बैनर तले इस तरह कि online प्रार्थनाएं की जाएँ तो कितना अच्छा हो।

इस विचार को ट्रस्टीज और दीदी के सम्मुख रखा गया जिसकी सहर्ष अनुमति मिली और यह सुझाव रखा गया कि नारायण भवन को प्रयोग के लिए सिर्फ नौ रात्रि तक और १०० लोगों के ज़ूम पर प्रारंभ किया जाए। इस नौ दिनों में कोर कमिटी, ट्रस्टीज़, सेंटर हेड्स, नारायण धाम कि साधिकाएं, रेडियंट स्टार्स, और NRSP के बहुत से सतसंगियों ने देश, विदेश से अपनी सेवाएं दीं। बड़ों से लेकर बच्चों तक सबने अपनी सेवाएं दीं। ससुराल, मायका, दोस्त, मित्र सहेलियाँ, सहायक, डाक्टर, इंजीनियर, एडवोकेट, मैनेजमेंट गुरु से लेकर होम मेकर तक सभी जुड़े। सबके लिए नारायण भवन कि प्रार्थनाएं उत्सव स्वरूप रहीं। हर घर में उत्सव सा माहौल बन गया। हजारों कि संख्या में लोग ब्रह्म मुहूर्त और दोपहर कि साधना से जुड़े और ऐसे जुड़े कि घर कि जिम्मेदारियों को और अधिक बेहतर तरीके से अंजाम देते हुए, संबंधों को और अधिक मिठास से भरते हुए, बड़ों का सम्मान करते हुए, अपनी गलतियों कि क्षमा माँगते हुए और गलतियों को कभी न दोहराने का कमिटमेंट करते हुए लोग हजारों कि संख्या में इस जोड़ को मजबूत, और मजबूत, गहरा और गहरा, और दृढ़, और दृढ़ करते गए। टीम के साथ- साथ हर सतसंगी तन, मन, धन से भवन कि उन्नति, प्रगति कि कामना करता है। नए- नए सुझाव प्रतिदिन टीम के पास पहुँचते हैं जिनपर NRSP अमल करता है और भवन को अधिक- से अधिक लाभप्रद बनाने के लिए दीदी अपनी टीम के साथ प्रयासरत हैं। भवन कि परिकल्पना हुई। कोर कमिटी ने रात-रात जागकर लिस्ट बनाई, किसी ने ज़ूम को संभाला, किसी ने विशिष्ट लोगों को आमंत्रित किया और बस तैयार हो गया नारायण भवन राज दीदी के सान्निध्य में लोगों के जीवन को सप्त सितारा बनाने के लिए।

पर नारायण भवन ने जो दिया वह अद्भुत है, अद्वितीय है, अविस्मरणीय है, अलौकिक है। नारायण रेकी सतसंग परिवार घनिष्ठ आपसी संबंधों पर बल देता है। संबंधों को मजबूत बनाए रखने लिए एक अनोखी साधना राज दीदी के माध्यम से भवन में बताई गई। हमारे संबंध मजबूत होते हैं हमारे विचार, वाणी, व्यवहार के सकारात्मक उपयोग से। दीदी ने सुझाया कि अपने विचार, वाणी, व्यवहार को हर घंटे पर चैक करना है कि हम एक घंटे में कितनों के चेहरे कि मुस्कान कि वजह बने और कितने के चेहरों कि खुशी हमारे विचार व व्यवहार के कारण गई। जितने लोगों कि मुस्कान का कारण हम बने उतने ग्रीन स्टार स्वयं को दें और जितने चेहरों कि मुस्कान हमारे कारण गायब हुई उन्हें रेड स्टार दें। निरंतर यह प्रयास करें कि आपके जीवन में हरे स्टारों कि संख्या बढ़ती रहे। इसके लिए आपको अपनी विचार, वाणी, व्यवहार को सकारात्मक रखना होगा। याद रखें किसी के चेहरे कि

मुस्कान आपकी बात से ज्यादा जिस टोन में वह बात कही गई उस वजह से जाती है। हर घंटे कि यह **आत्म चैक पॉइंट पद्धति** आपको एक श्रेष्ठ मनुष्य की श्रेणी में सहज ही ला खड़ा करेगी।

जीवन में से नकारात्मकता को उखाड़ फेंकने के लिए एक बहुत ही सरल उपाय जो नारायण भवन से दीदी ने बताया वह है **फिंगर साधना**। जहां आपको नारायण से प्रार्थना करनी है कि आपके भीतर कि सारी नकारात्मकता बाहर निकल गई है और आप सकारात्मक ऊर्जा से भर गए हैं और हर एक फिंगर को पकड़कर सवा मणि कि माला करनी है यदि आप अकेले बैठकर यह साधन कर रहे हैं। पर यदि आप समूह में या भवन में चल रहे सत्रों में बैठकर **फिंगर साधना** कर रहे हैं तो दोनों हाथों कि उंगलियों को आपस में फंसा कर राम-राम २१ भी कर सकते हैं। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए दीदी ने परंपरागत **साष्टांग प्रणाम** कि प्रक्रिया सतसंगियों को सिखाई। दीदी ने बताया कि जब हम धरती माता को प्रणाम करते हैं तो धरती माता हमारे भीतर कि नकारात्मकता को अपने भीतर सोख लेती है और हमारे भीतर सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होना शुरू हो जाता है। इसी प्रकार जब हम घर के बड़ों को, बुजुर्गों को साष्टांग प्रणाम करते हैं तो उनका आशीर्वाद हमें प्राप्त होता है और हमारा जीवन सातों सुखों से परिपूर्ण हो जाता है। दीदी ने कहा माता–पिता इस धरती पर जीते, जागते भगवान हैं। वो सौभाग्यशाली हैं जिन्हें इन साक्षात ईश्वर कि सेवा करने का अवसर मिलता है। संबंध सुधार कि प्रक्रिया में भवन से एक और साधना बताई गई – **प्लांट साधना**। दीदी ने कहा कोई भी एक प्लांट लें, यदि तुलसी प्लांट ले रहें हैं तो सर्वोत्तम। उस प्लांट को एक नाम दें। उसे अपना मित्र मानें। आपका यह मित्र संदेश वाहक का काम करेगा। आप जिस भी व्यक्ति को कोई मेसेज देना चाहते हैं जो आप उसे रूबरू नहीं दे सकते तो अपने मित्र प्लांट से कहें कि आपका मेसेज उस व्यक्ति को दे दें। सतसंगियों ने इस साधन को जीवन में उतारा और अनेकों लाभ उठाए। इस संबंध में दीदी ने **विनम्रता को अपनाने** कि सलाह दी और विनम्रता आसानी से जीवन में उतार जाए इसके लिए एक सिम्बल भी भवन में दिया गया। कई लोगों ने यह शेयर किया कि उन्होंने विनम्रता का गहन पहना और उनके परिजनों से उन्हें कोंपलीमेंट्स तो मिले ही रिश्तों में सुधार हुआ और उन्नति, प्रगति, सफलता के मार्ग खुले हैं।

कन्फेशन और कमिटमेंट का दौर भवन में प्रारंभ हुआ। जहां एक ओर लोगों ने हजारों की मौजूदगी में अपनी गलती मानी वहाँ हीं दूसरी ओर उन गलतियों को न दोहराने का कमिटमेंट लिया। साथ ही जिनको उन्होंने हर्ट किया था उनके सुख, शांति, सेहत समृद्धि के लिए जप और तप भी किए। सतसंगियों ने अपनी इच्छापूर्ति के लिए जप और तप का सहारा लिया। लोगों ने अपनी मनपसंद खाद्य पदार्थ छोड़े तो किसी ने विशेष क्रियाएं करने का तप लिया। इसका दोहरा लाभ हुआ। लोगों कि विश तो पूरी हुयी हीं लोगों के स्वास्थ्य में भी सुधार हुआ। कन्फेशन और **क्षमादान कि प्रक्रिया** ने लोगों को मन से मजबूती प्रदान की। एक के कन्फेशन ने हजारों को अपनी गलती मानने, उन्हें सुधारने के लिए प्रेरित किया।

रविवार को होने वाली **समृद्धि साधना** ने सतसंगियों के व्यापार में उन्नति प्रदान की। बहुतों को नए जॉब उनके मनचाहे पैकेज के साथ मिले। बहुतों का रुका हुआ धन वापस मिल और जीवन में समृद्धि के नए नए मार्ग खुले। **कार्मिक हीलिंग** के माध्यम से कार्मिक खातों को बैलन्स किया गया जिससे उन्नति, प्रगति, सफलता के द्वार खुले। बहुतों कि शादियाँ हो गयीं, बहुत सी महिलाओं ने गर्भधारण किया बहुत से लोगों के रुके हुए काम सहज ही पूरे हो

।।卐।।

गए। दीदी द्वारा अच्छी आदतों के विकास के लिए कि गई साधना से बच्चों के भीतर जो अच्छी आदतें थीं उनका विकास हुआ और नकारात्मक आदतें बाहर हो गयीं। दीदी ने **बिजली और पानी कि बचत का सुझाव** दिया जिसपर चलकर सतसंगियों ने लाखों के बिल को हजारों में परिवर्तित कर लिया। **जल को संजीवनी बूटी** बनाने के आसान उपाय ने बड़ी ही सहजता से हमें स्वास्थ्य लाभ दे दिया। **नारायण कवच,लक्ष्मण रेखा, विनम्रता, कमिट्मेंट और शक्ति सिम्बल देकर भवन ने सत सतसगियों कि झोली को अनेकों दैवीय उपहारों से भर दिया।**

इस अद्भुत, अविस्मरणीय, अदवतीय, अविरल, अनंत नारायण भवन को शत- शत नमन जिसने अपने सान्निध्य में लोगों को जीवन कि एक नई राह दिखाई। दिल कि गहराइयों से अभिनंदन जिन्होंने नारायण भवन में पल-पल सेवाएं दीं। शुक्रिया उन सभी का जो प्रतिदिन इस नारायण भवन के साथ चल रहे हैं। धन्यवाद राज दीदी का हेज का जिसने इस नवीन इतिहास को रचा और एक ऐसे समाज के निर्माण में अपनी महती भूमिका निभा रहा है जो सतयुग के पुन:रागमन कि आहट है।

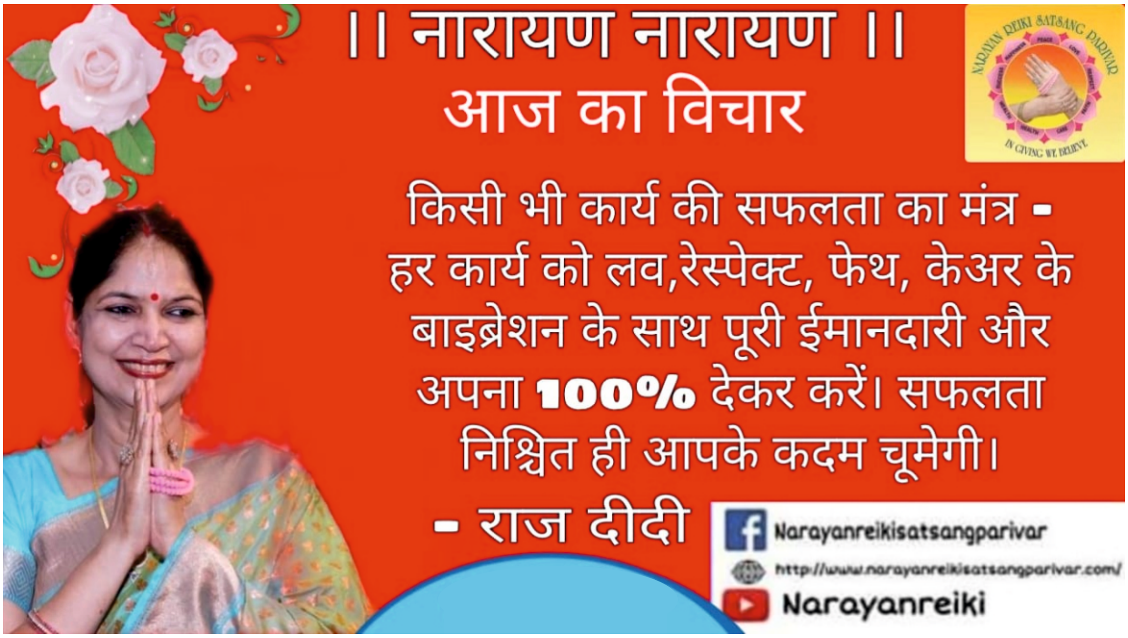

ज्ञान मँजूषा

।। 卐 ।।

ज्ञान मंजूषा ऐसा स्तंभ है जिसके माध्यम से हम दीदी कि वाणी पाठकों तक पहुँचाते हैं । जब से ऑन लाइन नारायण भवन में प्रार्थनाएं शुरू हुई हैं तब से हम नारायण रेकी सतसंग परिवार के खजाने से पाठकों के लिए चुनींदा बातें पाठकों के लिए लाते हैं । पेश हैं ऐसे ही चुने हुए ज्ञान के कुछ मोती विभिन्न किरदाकरों के माध्यम से :-

विजयलक्ष्मी का प्रसंग :-

दीदी ने विजयलक्ष्मी जो कि अपने भाई के लिए प्रार्थना कर रही थी के माध्यम से कुछ विचार साझा किए :-

१) घर का एक सदस्य भी अस्वस्थ होता है तो हम शांति की नींद नहीं सो पाते ।

२) भाव ये आया कि अगर हम पूरी रात चैन की नींद सोए हैं तो इसका मतलब ये नहीं कि उसने हमें बढ़िया नींद उपहार स्वरूप दी है बल्कि उसका मतलब ये भी है कि उसने हमारे परिवार के सदस्यों का ध्यान रखा है, उन्हें सुरक्षा प्रदान की है तभी तो हम चैन की नींद सोए है नहीं तो कहां से सोते ।

३) बात यहां पर नहीं रुकती यदि हमारे पड़ोसी को, रिश्तेदार को भी कोई परेशानी है तो उसका भी हमारी नींद पर असर होता है । तो सोचिए हमें चैन की नींद सुलाने के लिए उसे कितनोंका ध्यान रखना पड़ता है । कितनों की सुरक्षा करनी पड़ती है? हमारे परिवार के सदस्यों की, हमारे प्रियजनों की, हमारे रिश्तेदारों की ।

तो ये जो मीठी नींद आप सोते है उसके लिए सुबह उठकर कम से कम उसका धन्यवाद तो करें ।

विजयालक्ष्मी कहती हैं हमने अपने जीवन में कई चीजों को टेकन फॉर ग्रांटेड ले रखा है । हमें चैन की नींद सुनाने के लिए उसने भी तो पानी को थाम रखा है। तो क्या हमारा कर्तव्य नहीं बनता जो सुख सुविधाएं उसने दे रखी है उसका धन्यवाद प्रकट करें । आप से अधिक नहीं होता तो बस जब नींद खुले तो कहें, हे नारायण धन्यवाद मीठी नींद सुलाने के लिए । दूसरा धन्यवाद एक नया दिन देने के लिए । और साथ ही साथ जो नया दिन दिया है उसके लिए इतना शक्ति दे, इतना सामर्थ्य दे कि तेरे दिए कण- कण का क्षण- क्षण का सदुपयोग कर सकूं। विश्वास कीजिए । जब आप ऐसा करेंगे तो आपको बहुत अच्छे नतीजे मिलेंगे । इतनी प्रार्थना, हे नारायण आपका धन्यवाद है । आप हर पल हर क्षण हमारे साथ है इसलिए आज का दिन हमारे जीवन का सर्वोत्तम दिन है, सर्वश्रेष्ठ दिन है प्यार आदर सम्मान प्रशंसा सफलता जैकपॉट से भरा हुआ । यह प्रार्थना आपका जीवन बदल देगीरात को सोने से पहले ये दो पंक्तियां जरूर बोल और सात दिन में इसके चमत्कार देख लीजिए। रात को सोने से पहले, 'हे नारायण आपका धन्यवाद है आजीवन स्वस्थ रहने का वरदान देने के लिए इसलिए हम पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं, स्वस्थ हैं, स्वस्थ हैं ।

यह विचार आपके अवचेतन मन में जाएगा और वैसे केमिकल छोड़ेगा कि आप स्वस्थ रहेंगे । जब आप प्रार्थना करते हैं तो यह आपको औरा के इर्द गिर्द एक सुरक्षा कवच तैयार हो जाता है और यह आपको नकारात्मक तरंगों से बचाता है । इतनी सी प्रार्थना आपकी औरा में दिन प्रतिदिन आपकी परिवर्तन लाएगा । नारायण धन्यवाद ।

राजा द्रुपद का प्रसंग :-

राजा द्रुपद अपनी बेटी द्रोपदी का विवाह करना चाहता था । ऐलान करवाया और एक प्रतियोगिता रखी इस

प्रतियोगिता में जो जीतेगा वही उनकी बेटी द्रोपदी का हाथ थामेगा। और बहुत सारे राजकुमार द्रोपदी का हाथ थामने के लिए तैयार थे । प्रतियोगिता थी ऊपर घूमती हुई मछली की आंख को नीचे पानी में देखकर तीर चलाना था । जिस दिन प्रतियोगिता थी उसके पहले दिन की बात है भगवान श्री कृष्ण अर्जुन से कह रहे थे। जब तुम प्रतियोगिता स्थल के निकट जाओगे तो कदम धीरे-धीरे आगे बढ़ाना और अपना पूरा ध्यान मछली की आंख पर ही रखना । अर्जुन कृष्ण की पूरी बात सुने बिना झट से बोल पड़ा। सब कुछ मैं ही करूंगा तो आप क्या करेंगे । भगवान श्री कृष्ण ने विनम्रता से उत्तर दिया, 'जो तू नहीं कर सकता'। 'भगवान में क्या नहीं कर सकता'? 'तुम पानी को स्थिर नहीं रख सकते'।

मीरा का प्रसंग :-

हमें हमारे जीवन में कितने सारे मौके मिलते हैं दूसरों की मदद करने के लिए । यह हमारे ऊपर है हम कितने क्षणों को पकड़ लेते हैं कि हाँ हम मदद करेंगे । और मदद सिर्फ रुपयों पैसों से ही होती है ऐसा नहीं है । किसी ने अपने मन की बात कर ली आपने सुन ली सहानुभूति जता दी यह भी मदद है । किसी ने कोई अच्छा सा कार्य किया चाहे छोटा सा ही हो आपने प्रशंसा कर दी यह भी एक मदद है । किसी की मुस्कान का कारण बने यह भी एक मदद है ।

बराक ओबामा का कथन :-

यदि आप निराश हैं उठिए घर से बाहर निकलिए, इंतजार मत कीजिये कि कोई आएगा सहायता देगा तो आपको अच्छा महसूस होगा । बाहर निकलिए दूसरों की मदद कीजिए । इस दुनिया को आशा से भरिए आप अपने आप ही आशा से भर उठेंगें । जब आपके मन में मदद करने का भाव आया तो आप महसूस करेंगे कि शरीर में सकारात्मक तरंगे प्रवाहित होनी शुरू हो गयीं और उन्होंने समृद्धि को आकर्षित कर लिया । यदि आपकी खुद कि औरा कमजोर है तो किसी सशक्त आभामंडल से जुड़ जाइये । धागे में खुद में सामर्थ्य नहीं है किसी के गले का हार बनने के लिए पर जब इसमें फूल पिरो दिए जाते हैं तो ईश्वर के गले का हार बन जाता है । अच्छे कार्य करें और अपनी ओरा को मजबूत बनाएं । आप अपने जीवन में सभी अच्छी चीजों को आकर्षित करेंगे ।

श्री गौतम बुद्ध का प्रसंग :-

भगवान बुद्ध ने कहा था कि आप नकारात्मक विचारों और व्यवहार से नकारात्मकता को दूर नहीं कर सकते । नकारात्मक विचार और नकारात्मक व्यवहार नकारात्मक परिणाम देते हैं । अच्छे विचार और अच्छे कार्य सकारात्मक परिणाम देते हैं । दीदी ने समझाया कि क्रोध, निंदा जैसे विभिन्न रूपों में हमारे भीतर नकारात्मक ऊर्जा रहती है, लेकिन इन सभी में से ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार सबसे नकारात्मक और बहुत नुकीली ऊर्जा हैं, यह हमारी औरा को तार- तार कर देती है, उसकी रिपेयरिंग भी नहीं हो सकती है ।

एक शिक्षिका का प्रसंग :-

दीदी ने एक सच्ची जीवन घटना सुनाई। एक महिला जो शिक्षिका थी अपनी ११ साल की बेटी की काउंसलिंग

के लिए दीदी के पास गई। महिला ने दीदी के साथ साझा किया, कि वह स्कूल में एक शिक्षिका थी और चाहती थी कि उसकी बेटी ईमानदारी से पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करे। महिला ने बताया कि तमाम कोशिशों और उचित देखभाल के बावजूद उनकी बेटी अधिक लापरवाह, गैर जिम्मेदार और जिद्दी होती जा रही है। दीदी ने पूछा कि उसके परिवार में कितने सदस्य हैं, महिला ने कहा कि उसका पति, उसकी बेटी और उसकी सास उसके साथ रहती है। दीदी ने उसकी सास के साथ उसके संबंधों के बारे में पूछताछ की तो महिला ने तुरंत कहा कि वह अपनी सास को बर्दाश्त नहीं कर सकती, उनसे उसे बहुत चिढ़ होती है । दीदी ने उसे समझाया कि उसकी सास के प्रति उसकी नकारात्मक ऊर्जा उसकी बेटी पर असर दिखा रही है और उसे हर किसी के प्रति नकारात्मक व्यवहार करने के लिए मजबूर कर रही है । दीदी ने उसे प्यार का इजहार करने और अपनी सास की देखभाल करने के लिए कहा। दीदी ने उससे कहा कि उठते ही पहले उसे अपनी सास को अपनी मानसिक स्क्रीन पर देखना है और उनसे कहना है कि आई लव यू, आई लाइक यू, आई रेस्पेक्ट यू, नारायण आपको सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, प्यार, आदर सम्मान, विश्वास, देखभाल का आशीर्वाद दें । सात बार कहना है और यही प्रक्रिया रात सोते वक्त भी दोहरानी है । दीदी के मार्गदर्शन में महिला ने ईमानदारी से इस प्रक्रिया का पालन किया, अपनी सास के प्रति उसका रवैया सकारात्मक हो गया । उसकी बेटी के व्यवहार में सुधार आ गया। महिला एक शिक्षिका थी और दीदी ने उन्हें अपने छात्रों को अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए कहा । महिला ने अपने छात्रों को बहुत ईमानदारी और समर्पण भाव से पढ़ाया और परिणाम उनकी अपनी बेटी ने कक्षा में टॉप किया ।

एक अन्य महिला का प्रसंग :-

एक महिला का चार साल का बेटा बहुत आक्रामक था, वह अपने सहपाठियों को मारता और काटता था । अपनी माँ से बात करते हुए दीदी को पता चला कि उसकी भाभी के साथ उसके संबंध अच्छे नहीं थे। दीदी ने उसे याद करने के लिए कहा कि जब भी उसे अपनी भाभी से जलन या चिढ़ होती है तो क्या उसी वक्त बेटा स्कूल में आक्रामक व्यवहार करता है । महिला ने कहा हाँ जब भी उसे अपनी भाभी से जलन होती थी उसी दिन उसके बेटे ने स्कूल में नकारात्मक व्यवहार किया। दीदी ने उन्हें मानसिक स्क्रीन पर अपनी भाभी की कल्पना करने और सुख, शांति, समृद्धि प्यार, आदर सम्मान, विश्वास, देखभाल और आशीर्वाद भेजने की वही प्रक्रिया सिखाई । महिला ने सात दिनों तक इसका अभ्यास किया और बताया कि उनके बेटे के व्यवहार में काफी सुधार हुआ है ।

दीदी ने कहा कि जिन लोगों से आप चिढ़ते हैं या नाराज होते हैं, उन पर असर नहीं होता है, लेकिन आपकी खुद की औरा प्रभावित होती है, वह क्षतिग्रस्त हो जाती है और अच्छी चीजें आपसे दूर हो जाती हैं ।

दीदी ने समझाया कि हमें उन लोगों के प्रति अच्छा होना चाहिए जिनके साथ हम रहते हैं । अगर हमारे मन में उनके प्रति कोई नकारात्मक भावना है तो उसे विजुएलाइज करें और आशीर्वाद की उपरोक्त प्रक्रिया के साथ करके छोड़ दें ।

क्योंकि यह नकारात्मकता आपको जीवन में आगे नहीं बढ़ने देगी। जब आप उस व्यक्ति को सुख, शांति, समृद्धि और प्रेम, आदर सम्मान, विश्वास, देखभाल का आशीर्वाद देते हैं तो आप भी उसे गुणकों में आकर्षित करेंगे ।

युवा मंच

१३ अप्रैल को हमने नारायण भवन का पहला जन्मदिन मनाया। वर्चुअल नारायण भवन की स्थापना वरदान साबित हुई और मानो सबका सपना साकार हो गया। देश-विदेश के सतसंगी हमेशा राज दीदी के साथ रहना चाहते थे और उनका सत्संग सुनना चाहते थे। सामान्य समय में ऐसा होता था लेकिन यह अक्सर सम्भव नहीं था। ऑनलाइन सत्संग से न केवल एनआरएसपी सतसंगी बल्कि दुनिया भर के लोग राज दीदी के साथ दैनिक प्रार्थना से जुड़ रहे हैं और लाभान्वित हो रहे हैं। मुख्य श्रेय राज दीदी के सतयुग के दृष्टिकोण को जाता है कि हर व्यक्ति अपने विचारों, शब्दों और कर्मों में सकारात्मक हो। लेकिन इसे हकीकत में बदलने के लिए ज़ूम और यू ट्यूब के साथ रेडियंट स्टार टीम ने हर तरह से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

यह एक सामान्य सोच है कि आज का युवा तकनीक के संपर्क में आने के कारण बिगड़ रहा है लेकिन सच्चाई यह है कि यह सब व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह तकनीक का उपयोग कैसे करता है।

इसे कुम्हार के उदाहरण से अच्छी तरह समझा जा सकता है जो घड़ा और चिलम दोनों बनाता है। ठंडे पानी से भरा घड़ा सूखे गले की प्यास बुझाता है जबकि चिलम एक नशा है जो कैंसर का कारण है। हमारे रेडीयंट स्टार्स ने राज दीदी द्वारा बताए गए मूल्यों के प्रचार के लिए आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल किया है। ज़ूम लिंक, यूट्यूब, वीडियो व स्लाइड बनाने और संपादित करने का काम चौबीसों घंटे चलता रहता है।

एक छोटी सी टीम के साथ जो काम शुरू हुआ, उसने कई और लोगों को इस विजन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। नारायण भवन ने दुनिया भर के लोगों को बहुत सारे मूल्य सिखाए हैं जिनमें से कुछ को उँगली पर गिना जा सकता है-

समय प्रबंधन

समर्पण

धैर्य

रचनात्मकता

टीम भावना

आपसी प्यार, सम्मान, विश्वास, देखभाल और एकजुटता।

नेतृत्व और मेंटरशिप

पुराने रीति-रिवाजों का पुनरुद्धार और महत्व।

एक बार जब ये गुण आज के युवाओं में समाहित हो जाएंगे, तो उनकी संतानें स्वतः ही इन्हें अपना कर अपना जीवन संवारेंगी और इस प्रकार भविष्य की विश्व व्यवस्था उज्ज्वल और अद्भुत होगी। पिछले दो वर्षों से वैलेंटाइन डे को सार्थक दिशा देने के लिए युवाओं ने इसे प्रेम सप्ताह के रूप में मनाया।

प्रेम सप्ताह :

७ फरवरी - सफाईकर्मियों को धन्यवाद - उन्हें उपहार या कार्ड देना।

८ फरवरी - अन्नदान अभियान

९ फरवरी - वृक्षारोपण अभियान

१० फरवरी - पशुओं के लिए भोजन दान अभियान

११ फरवरी - जरूरतमंद बच्चों को अध्ययन सामग्री दान करना ।

१२ फरवरी - अनाथालय / वृद्धाश्रम का दौरा

१३ फरवरी - दीदी द्वारा प्यार के वास्तविक अर्थ के बारे वार्तालाप जो वास्तव में देखभाल है ।

१४ फरवरी - माता-पिता का आभार / माता पिता, गुरु ।

१३ अप्रैल, २०२१ से लेकर आज तक नारायण भवन के संचालन में रेडीयंट स्टार्स की अहम भूमिका रही है । राज दीदी के संदेश को दुनिया में फैलाने में उनका योगदान अभूतपूर्व है और सतयुग कि टीम उन्हें इसके लिए नमन करती है ।

बच्चों की फुलवारी

२४/७ प्रार्थना कक्ष का एक वर्ष। कमाल का कारनामा। इसलिए जब यह तय किया गया कि इस महीने का सतयुग का अंक इसे समर्पित होगा तो टीम उत्साह से भर गई। एक छोटा सा विचार मील का पत्थर साबित हुआ।

ऑनलाइन प्रार्थना कक्ष में आने वाले सभी लोग निश्चित रूप से इस दिव्य प्रार्थना कक्ष के लिए आभार व्यक्त करते हैं। जब भवन शुरू किया गया था तो इसका उद्देश्य विश्व भर में चल रही विपरीत परिस्थिति में लोगों को प्रार्थना के माध्यम से धैर्य प्रदान करना और जीवन को खुशनुमा बनाने के लिए मार्गदर्शन देना था। हमारे कई युवा रेडिएंट स्टार्स ने अपने माता-पिता के लिए प्रार्थना करने का अवसर को अपनाया। शुरुआती दिन मुख्य रूप से प्रार्थना के लिए समर्पित थे क्योंकि यह समय की मांग थी। शुरुआती दिनों में जब टीम प्रतिभागियों को अनम्यूट करती थी, ताकि वे राम राम २१ का जाप कर सकें, यह सभी के लिए ध्यान केंद्रित करने कि एक साधना थी ताकि उन्हें अनम्यूट किया जा सके। जब भी रेडिएंट स्टार्स के घर में माता-पिता और बुजुर्गों को जूम में शामिल होने, हाथ उठाने और राम राम को बोलने कि बारी आती रेडिएंट स्टार्स उनकी भरपूर मदद करते। इस तरह से उन्होंने अच्छे कर्म जमा किए।

फिर निर्धारित प्रार्थनाएँ हुईं, और फिर से ने रेडिएंट स्टार्स ने विभिन्न उत्सवों पर भवन में उत्सव कि रूपरेखा तैयार करने और उनको मूर्त रूप देने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। लॉक डाउन कि अवधि बौद्धिक विकास का भी दौर था। भवन में रेडिएंट स्टार्स द्वारा कई नए विचार साझा किए गए, इसने बहुत से लोगों लोगों को लीडिग ए मीनिंगफूल लाइफ, और फाऊँडेशन टू सक्सेस कोर्स ज्वाइन करने को प्रेरित किया। फिर कन्फेशन और कमिटमेंट का दौर आया और फिर से हमारे रेडिएंट स्टार्स कनफेशन और कमिट्मेंट को निभाया यह दिल को छू लेने वाला था। जब छोटे- छोटे बच्चों ने झूठ न बोलने और सही रास्ते पर चलने का कमिट्मेंट लिया तो दिल से आशीर्वाद की, दुवाओं की बोछार हुई। यह तो और भी गर्व का क्षण था जब माता-पिता स्क्रीन पर आए और साझा किया कि बच्चे घर के सकारात्मक माहौल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

ऑनलाइन स्पार्कलिंग स्टार कोर्स की भी सफलता का श्रेय इस नारायण भवन को जाता है। दुनिया भर के बच्चों ने एक ऑनलाइन छत के नीचे सफलता की नींव सीखी। सीमाओं से विभाजित लेकिन नारायण भवन और सभी सुनहरे मूल्यों के साथ वासुदेव कुटुम्ब के विचार से एकजुट। कमाल का कारनामा।

एक साल अच्छा बीता।

नारायण से प्रार्थना है कि यह नारायण भवन सदैव बच्चों को, युवाओं को प्रेरित करें और हमारे जीवन का अनिवार्य हिस्सा बना रहे। नारायण भवन की परिकल्पना, स्थापना और क्रियान्वयन में जिन लोगों ने अपनी भूमिका निभाई उन सभी को सतयुग की टीम नमन करती है।

रंजीता मालपानी को नारायण का समृद्धि भरा आशीर्वाद। नारायण के आशीर्वाद से रंजीता अपनी ट्यूशन क्लासेस और स्टॉक मार्केट से ५६ करोड़ रुपये साल का कमा रही हैं।

दीदी के छाँव तले

एक सतसंगी आशीष जी का यह साझा करना कि वे टीम इंडिया (महिला) के लिए बहुत ईमानदारी से प्रार्थना कर रहे थे, फिर भी वे हार गईं, इस विचार को उभारा कि जब हम स्वयं के लिए प्रार्थना करते हैं, तो हम अपने विचार, वाणी और व्यवहार पर काम करते हैं और मनचाहे परिणाम प्राप्त करते हैं, लेकिन जब हम दूसरों के लिए प्रार्थना करते हैं, जब हम एक टीम के लिए प्रार्थना करते हैं तो उनका व्यवहार, उनका चरित्र, उनकी ईमानदारी सब मायने रखती है।

माता-पिता अपने बच्चों की सफलता के लिए, उनकी शादी के लिए प्रार्थना करते हैं, लेकिन जब चीजों में समय लगता है और वह महसूस भी करते हैं, तो इसके बजाय वे उन लोगों के विचार वाणी व्यवहार (विचार, शब्द और व्यवहार) की जांच भी करें जिनके लिए वे प्रार्थना करते हैं।

नारायण भवन की सफलता नारायण की कृपा, हमारे गुरु राज दीदी के आशीर्वाद और पूरी भवन टीम, एनआरएसपी कोर टीम और उसके ट्रस्टियों और उसकी निस्वार्थ स्वयंसेवी टीम (नारायणधाम) की सकारात्मकता के कारण है। इस टीम वर्क की खूबी यह है कि हर व्यक्ति अपना सर्वश्रेष्ठ देता है, इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि एनआरएसपी के आदर्श और सिद्धांत दूर-दूर तक फैले और हर व्यक्ति सप्त सितारा जीवन जीए। टीम में प्रत्येक व्यक्ति ट्रस्ट के नियमों का राजदीदी के आदर्शों और सिद्धांतों का पालन करता है। वास्तव में, हम गर्व से कह सकते हैं कि हमारा कहना, सोना, सब एनआरएसपी है। अस्तित्व एनआरएसपी की वृद्धि और प्रगति है। इस टीम वर्क के कारण ही यह ऑनलाइन प्रार्थना कक्ष अपना पहला जन्मदिन इतनी भव्यता के साथ मना सका। प्रस्तुत हैं नारायण भवन कि कुछ शेयरिंग :-

प्रियंका पंत :- मैं एक ३२ वर्षीय उज्ज्वल सितारा हूं जो एक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक में सहायक प्रबंधक के रूप में कार्यरत हूं और मेरे पति आयकर विभाग में कार्यरत हैं। दिल्ली में रहने वाली मेरी सहकर्मी का २०१७ में उसकी शादी के एक साल बाद ही तलाक हो गया। उसके बाद से हम उसके परिवार के साथ उसके लिए एक उपयुक्त वर की तलाश कर रहे थे। हमने जीवनसाथी में भी उसकी प्रोफाइल बनाई लेकिन सफलता नहीं मिली। उसके बाद मैंने नवंबर २०२१ में एनआरएसपी से जुड़ी और उसके लिए शादी के लिए कर्म उपचार शुरू किया। मैंने अपने बॉस की आलोचना न करने की ठान ली, जो भी स्थिति हो क्योंकि भोजन में, मैं पहले से ही बहुत सीमित खाती हूं। इसलिए मैंने किसी की विशेष रूप से अपने बॉस की आलोचना न करने का यह प्रयास किया। हमारे लिए पूरी तरह से आश्चर्य की बात है कि हमने उस कार्मिक उपचार के एक महीने के भीतर उसके लिए एक उपयुक्त लड़का मिल गया। लड़के और उसके परिवार ने मेरी सहेली को खुले दिल से स्वीकार किया है। लड़के में ठीक वही गुण हैं जो राज दीदी हीलिंग में कहते हैं। आपका असीम धन्यवाद। जब भी किसी ने मेरे साथ अशिष्ट व्यवहार किया, तो मैंने कहा कि में तुमसे प्यार करती हूँ, मैं तुम्हें पसंद करती हूँ और मैं तुम्हारे मन में कोई नकारात्मक विचार पैदा करने के बजाय तुम्हारा सम्मान करती हूँ। ये शब्द जादू हैं। मैं सभी से अनुरोध करती हूं कि बस इन तीन शब्दों को ध्यान में रखें और आपका जीवन पूरी तरह से सकारात्मकता में बदल जाएगा। मैं बहुत

सकारात्मक हूं, और मेरे घर और कार्यस्थल का माहौल पूरी तरह से बदल गया है।

उज्ज्वला काले :- दीदी १८-२० साल पहले मुझमें ये अहंकार आ गया था की मेरा मन बहुत strong है। अगर मेरे जीवन में कुछ हुआ तो भी मुझे कुछ नहीं लगेगा। यहाँ तक कि एकलौती बेटी को भी कुछ हो जाता है तो मुझे कुछ नहीं लगेगा उसका परिणाम ऐसा हुआ की उसके दो साल बाद बेटी थोडी disturb हो गई। उससे घर में सबको बहुत तकलीफ हुई। इन १८ साल में वो बीच- बीच में थोडी- थोडी परेशान हो जाती थी। आज वो MS in computer science है और विदेश मे अच्छी कंपनी में job कर रही है लेकिन उसे बीच- बीच में anxiety घेर लेती है। ऑफिस में उसकी प्रगति नारायण-नारायण हो गई है। आज वह २८ साल की है। हम ३ साल से उसके शादी के लिये लड़का देख रहे है। दीदी १० महीनो से आपका सत्संग YouTube पर नियमित कर रही हूं। बेटी के बारे में मेरी ही पूरी गलती है ये नारायण ने अभी याद दिलाया। नारायण का बहुत- बहुत धन्यवाद. दीदी please भवन में मुझे नारायण से माफी दिलाइए। आपसे जुडने के पहले दिन से ही आपकी कही सारी बातें follow कर रही हूं और दूसरों को भी बताती हूं। ७-८ मेरे रिश्तेदार भी रोज सत्संग नियमित कर रहे है।

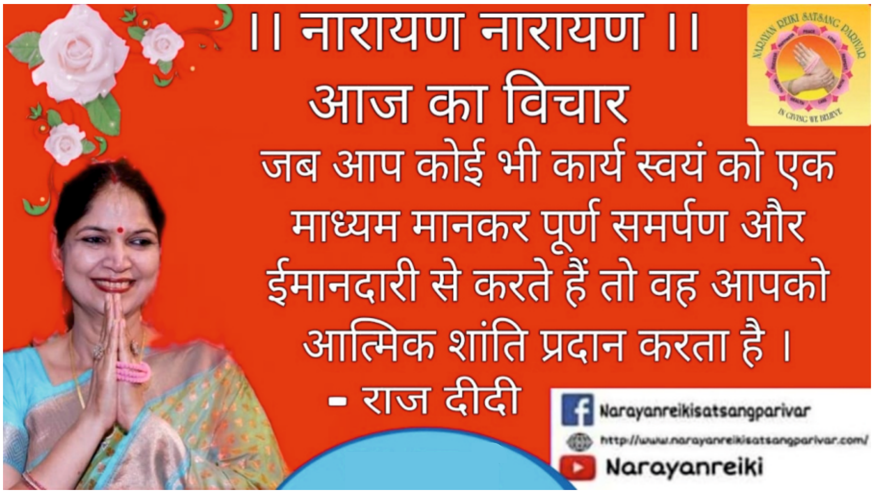

अजीता खन्ना को सुख, शांति, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सेहत, सफलता से भरे सप्त सितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद।

संतोष लड्ढा और लक्ष्मीकांत लढा को उनकी विवाह वर्षगांठ (३० अप्रैल) पर सुख, शांति, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सेहत, सफलता से भरे सप्त सितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद।

एक विश्वास

मेरी बेटी की शादी थी और मैं कुछ दिनों की छुट्टी ले कर शादी के तमाम इंतजाम को देख रहा था।

उस दिन सफ़र से लौट कर मैं घर आया तो पत्नी ने आकर एक लिफाफा मुझे पकड़ा दिया। लिफाफा अनजाना था लेकिन प्रेषक का नाम देख कर मुझे एक आश्चर्यमिश्रित जिज्ञासा हुई।

'अमर विश्वास' एक ऐसा नाम जिसे मिले मुझे वर्षों बीत गए थे।

मैंने लिफाफा खोला तो उस में १ लाख डालर का चेक और एक चिट्ठी थी।

इतनी बड़ी राशि वह भी मेरे नाम पर। मैंने जल्दी से चिट्ठी खोली और एक सांस में ही सारा पत्र पढ़ डाला।

पत्र किसी परी कथा की तरह मुझे अचंभित कर गया।

लिखा था,

आदरणीय सर, मैं एक छोटी सी भेंट आप को दे रहा हूं। मुझे नहीं लगता कि आप के एहसानों का कर्ज मैं कभी उतार नहीं पाऊंगा। ये उपहार मेरी अनदेखी बहन के लिए है। घर पर सभी को मेरा प्रणाम।

- आपका अमर।

मेरी आंखों में वर्षों पुराने दिन सहसा किसी चलचित्र की तरह तैर गये।

एक दिन मैं कोलकाता में टहलते हुए एक किताबों की दुकान पर अपनी मनपसंद पत्रिकाएं उलटज्पलट रहा था कि मेरी नज़र बाहर पुस्तकों के एक छोटे से ढेर के पास खड़े एक लड़के पर पड़ी। वह पुस्तक की दुकान में घुसते हर संभ्रांत व्यक्ति से कुछ अनुनय विनय करता और कोई प्रतिक्रिया न मिलने पर वापस अपनी जगह पर जा कर खड़ा हो जाता।मैं काफी देर तक मूकदर्शक की तरह यह नज़ारा देखता रहा।

पहली नज़र में यह फुटपाथ पर दुकान लगाने वालों द्वारा की जाने वाली सामान्य सी व्यवस्था लगी लेकिन उस लड़के के चेहरे की निराशा सामान्य नहीं थी। वह हर बार नई आशा के साथ अपनी कोशिश करता और फिर वही निराशा। मैं काफी देर तक उसे देखने के बाद अपनी उत्सुकता दबा नहीं पाया और उस लड़के के पास जा कर खड़ा हो गया।

वह लड़का कुछ सामान्य सी विज्ञान की पुस्तकें बेच रहा था।मुझे देख कर उस में फिर उम्मीद का संचार हुआ और बड़ी ऊर्जा के साथ उस ने मुझे पुस्तकें दिखानी शुरू कीं। मैंने उस लड़के को ध्यान से देखा। साफ-सुथरा, चेहरे पर आत्मविश्वास लेकिन पहनावा बहुत ही साधारण। ठंड का मौसम था और वह केवल एक हलका सा स्वेटर पहने हुए था। पुस्तकें मेरे किसी काम की नहीं थीं फिर भी मैंने जैसे किसी सम्मोहन से बंध कर उससे पूछा, 'बच्चे, ये सारी पुस्तकें कितने की हैं?'

'आप कितना दे सकते हैं, सर?'

'अरे, कुछ तुमने सोचा तो होगा।'

'आप जो दे देंगे,' लड़का थोड़ा निराश हो कर बोला।

'तुम्हें कितना चाहिए?' उस लड़के ने अब यह समझना शुरू कर दिया कि मैं अपना समय उस के साथ गुज़ार रहा हूं।

'५ हजार रुपए', वह लड़का कुछ कड़वाहट में बोला।

'इन पुस्तकों का कोई ५०० भी दे दे तो बहुत है।

मैं उसे दुखी नहीं करना चाहता था फिर भी अनायास मुंह से निकल गया।

अब उस लड़के का चेहरा देखने लायक था। जैसे ढेर सारी निराशा किसी ने उस के चेहरे पर उड़ेल दी हो। मुझे अब अपने कहे पर पछतावा हुआ।

मैंने अपना एक हाथ उस के कंधे पर रखा और उससे सांत्वना भरे शब्दों में फिर पूछा, 'देखो बेटे, मुझे तुम पुस्तक बेचने वाले तो नहीं लगते, क्या बात है.? साफ–साफ बताओ कि क्या ज़रूरत है?'

वह लड़का तब जैसे फूट पड़ा।

शायद काफी समय निराशा का उतार चढ़ाव अब उसके बरदाश्त के बाहर था।

'सर, मैं १०+२ कर चुका हूं। मेरे पिता एक छोटे से रेस्तरां में काम करते हैं।

मेरा मेडिकल में चयन हो चुका है। अब उसमें प्रवेश के लिए मुझे पैसे की ज़रूरत है। कुछ तो मेरे पिताजी देने के लिए तैयार हैं, कुछ का इंतजाम वह अभी नहीं कर सकते'। लड़के ने एक ही सांस में बड़ी अच्छी अंग्रेज़ी में कहा, 'तुम्हारा नाम क्या है?' मैंने मंत्रमुग्ध हो कर पूछा।

'अमर विश्वास।'

'तुम विश्वास हो और दिल छोटा करते हो।'

कितना पैसा चाहिए?'

'५ हजार।' अब की बार उस के स्वर में दीनता थी।

'अगर मैं तुम्हें यह रकम दे दूं तो क्या मुझे वापस कर पाओगे?

इन पुस्तकों की इतनी कीमत तो है नहीं,' इस बार मैंने थोड़ा हँस कर पूछा।

'सर, आपने ही तो कहा कि मैं विश्वास हूं।'

'आप मुझ पर विश्वास कर सकते हैं। मैं पिछले ४ दिन से यहां आता हूं, आप पहले आदमी हैं जिसने इतना पूछा।अगर पैसे का इंतजाम नहीं हो पाया तो मैं भी आपको किसी होटल में कप प्लेटें धोता हुआ मिलूंगा।' उसके स्वर में अपने भविष्य के डूबने की आशंका थी।

उसके स्वर में जाने क्या बात थी जो मेरे जेहन में उसके लिए सहयोग की भावना तैरने लगी। पर मस्तिष्क उसे एक जालसाज से ज्यादा कुछ मानने को तैयार नहीं था जबकि दिल में उसकी बात को स्वीकार करने का स्वर उठने

लगा था। आखिर में दिल जीत गया।

मैंने अपने पर्स से ५ हजार रुपए निकाले जिनको मैं शेयर मार्किट में निवेश करने की सोच रहा था और उसे पकड़ा दिए।

वैसे इतने रुपए तो मेरे लिए भी मायने रखते थे लेकिन न जाने किस मोह ने मुझ से वह पैसे निकलवा लिए।

'देखो बेटे, मैं नहीं जानता कि तुम्हारी बातों में तुम्हारी इच्छा शक्ति में कितना दम है लेकिन मेरा दिल कहता है कि तुम्हारी मदद करनी चाहिए, इसीलिये मैं ये कर रहा हूं।

तुमसे ४-५ साल छोटी मेरी बेटी भी है मिनी, सोचूंगा उसके लिए ही कोई खिलौना खरीद लिया।

मैंने पैसे अमर की तरफ बढ़ाते हुए कहा। अमर हतप्रभ था। शायद उसे यकीन नहीं आ रहा था। उसकी आंखों में आंसू तैर आए।

उसने मेरे पैर छुए तो आंखों से निकली दो बूंदें मेरे पैरों को चूम गई।

'ये पुस्तकें मैं आप की गाड़ी में रख दूं?'

'कोई ज़रूरत नहीं. इन्हें तुम अपने पास रखो।'

यह मेरा कार्ड है जब भी कोई ज़रूरत हो तो मुझे बताना।'

वह मूर्ति बन कर खड़ा रहा और मैंने उस का कंधा थपथपाया। कार स्टार्ट कर आगे बढ़ा दी।

कार को चलाते हुए वह घटना मेरे दिमाग में घूम रही थी और मैं अपने खेले जुए के बारे में सोच रहा था जिसमें अनिश्चितता ही ज्यादा थी। कोई दूसरा सुनेगा तो मुझे एक भावुक मूर्ख से ज्यादा कुछ नहीं समझेगा। अत: मैंने यह घटना किसी को न बताने का फैसला किया। दिन गुजरते गए।

अमर ने अपने मेडिकल में दाखिले की सूचना मुझे एक पत्र के माध्यम से दी। मुझे अपनी मूर्खता में कुछ मानवता नज़र आई। एक अनजान सी शक्ति में या कहें दिल में अंदर बैठे मानव ने मुझे प्रेरित किया कि मैं हजार २ हजार रुपए उसके पते पर फिर भेज दूं।'

भावनाएं जीतीं और मैंने अपनी मूर्खता फिर दोहराई। दिन हवा होते गये। उसका संक्षिप्त सा पत्र आता जिसमें चार लाइनें होतीं। दो मेरे लिए, एक अपनी पढ़ाई पर और एक मिनी के लिए।जिसे वह अपनी बहन बोलता था।

मैं अपनी मूर्खता दोहराता और उसे भूल जाता। मैंने कभी चेष्टा भी नहीं की कि उसके पास जा कर अपने पैसे का उपयोग देखूं और न कभी वह मेरे घर आया।

कुछ साल तक यही क्रम चलता रहा।

एक दिन उसका पत्र आया कि वह उच्च शिक्षा के लिए आस्ट्रेलिया जा रहा है। छात्रवृत्तियों के बारे में भी बताया था और एक लाइन मिनी के लिए लिखना वह अब भी नहीं भूला। मुझे अपनी उस मूर्खता पर दूसरी बार फख्र हुआ, बिना उस पत्र की सचाई जाने।

समय पंख लगा कर उड़ता रहा।

अमर ने अपनी शादी का कार्ड भेजा। वह शायद आस्ट्रेलिया में ही बसने के विचार में था। मिनी भी अपनी

पढ़ाई पूरी कर चुकी थी। एक बड़े परिवार में उस का रिश्ता तय हुआ था। अब मुझे मिनी की शादी लड़के वालों की हैसियत के हिसाब से करनी थी। एक सरकारी उपक्रम का बड़ा अफसर कागजी शेर ही होता है।

शादी के प्रबंध के लिए ढेर सारे पैसे का इंतजाम... उधेड़बुन... और अब वह चेक?

मैं वापस अपनी दुनिया में लौट आया। मैंने अमर को एक बार फिर याद किया और मिनी की शादी का एक कार्ड अमर को भी भेज दिया। शादी की गहमागहमी चल रही थी। मैं और मेरी पत्नी व्यवस्थाओं में व्यस्त थे और मिनी अपनी सहेलियों में। एक बड़ी-सी गाड़ी पोर्च में आ कर रुकी। एक संभ्रांत से शख्स के लिए ड्राइवर ने गाड़ी का गेट खोला तो उस शख्स के साथ उस की पत्नी जिसकी गोद में एक बच्चा था, भी गाड़ी से बाहर निकले। मैं अपने दरवाजे पर जा कर खड़ा हुआ तो लगा कि इस व्यक्ति को पहले भी कहीं देखा है।

उसने आ कर मेरी पत्नी और मेरे पैर छुए. "सर, मैं अमर..." वह बड़ी श्रद्धा से बोला। मेरी पत्नी अचंभित सी खड़ी थी। मैंने बड़े गर्व से उसे सीने से लगा लिया। उसका बेटा मेरी पत्नी की गोद में घर-सा अनुभव कर रहा था।

मिनी अब भी संशय में थी। अमर अपने साथ ढेर सारे उपहार ले कर आया था। मिनी को उस ने बड़ी आत्मीयता से गले लगाया। मिनी भाई पा कर बड़ी खुश थी। अमर शादी में एक बड़े भाई की रस्म हर तरह से निभाने में लगा रहा। उसने न तो कोई बड़ी जिम्मेदारी मुझ पर डाली और न ही मेरे चाहते हुए मुझे एक भी पैसा खर्च करने दिया। उसके भारत प्रवास के दिन जैसे पंख लगा कर उड़ गये।

इस बार अमर जब आस्ट्रेलिया वापस लौटा तो हवाई अड्डे पर उसको विदा करते हुए न केवल मेरी बल्कि मेरी पत्नी, मिनी सभी की आंखें नम थीं।

हवाई जहाज ऊंचा और ऊंचा आकाश को छूने चल दिया और उसी के साथ- साथ मेरा विश्वास भी आसमान छू रहा था। मैं अपनी मूर्खता पर एक बार फिर गर्वित था और सोच रहा था कि इस नश्वर संसार को चलाने वाला कोई भगवान और हमारा विश्वास ही है।

खूबसूरत कर्जा

विवाह के दो वर्ष हुए थे जब सुहानी गर्भवती होने पर अपने घर पंजाब जा रही थी। पति शहर से बाहर थे। गाड़ी को पांचवे प्लेटफार्म पर आना था। गर्भवती सुहानी को सातवाँ माह चल रहा था। सामान अधिक होने से एक कुली से बात कर ली। बेहद दुबला पतला बुजुर्ग पेट पालने की विवशता उसकी आँखों थी। एक याचना के साथ सामान उठाने को आतुर। सुहानी ने उसे पंद्रह रुपये में तय कर लिया और टेक लगा कर बैठ गई। तकरीबन डेढ़ घंटे बाद गाडी आने की घोषणा हुई। लेकिन वो बुजुर्ग कुली कहीं नहीं दिखा। कोई दूसरा कुली भी खाली नज़र नही आ रहा था। ट्रेन छूटने पर वापस घर जाना भी संभव नही था। रात के साढ़े बारह बज चुके थे। सुहानी का

मन घबराने लगा। तभी वो बुजुर्ग दूर से भाग कर आता हुआ दिखाई दिया। बोला चिंता न करो बिटिया हम चढ़ा देंगे गाडी में। भागने से उसकी साँस फूल रही थी। उसने लपक कर सामान उठाया और आने का इशारा किया। सीढ़ी चढ़ कर पुल से पार जाना था क्योकि अचानक ट्रेन ने प्लेटफार्म चेंज करा था जो अब नौ नम्बर पर आ रही थी। वो साँस फूलने से धीरे धीरे चल रहा था और सुहानी भी तेज चलने हालत में न थी। गाडी ने सीटी दे दी। भाग कर अपना स्लीपर कोच का डब्बा ढूंढा।

डिब्बा प्लेटफार्म खत्म होने के बाद इंजिन के पास था। वहां प्लेटफार्म की लाईट भी नहीं थी और वहां से चढ़ना भी बहुत मुश्किल था।

सुहानी पलटकर उसे आते हुए देख ट्रेन मे चढ़ गई। तुरंत ट्रेन रेंगने लगी। कुली अभी दौड़ ही रहा था। हिम्मत करके उसने एक- एक सामान रेलगाड़ी के पायदान के पास रख दिया। अब आगे बिलकुल अन्धेरा था। जब तक सुहानी ने हडबडाये कांपते हाथों से दस का और पांच का का नोट निकाला। तब तक कुली की हथेली दूर हो चुकी थी। उसकी दौड़ने की रफ़्तार तेज हुई। मगर साथ ही ट्रेन की रफ़्तार भी। वो बेबसी से उसकी दूर होती खाली हथेली देखती रही। और फिर उसका हाथ जोड़ना नमस्ते और आशीर्वाद की मुद्रा में।

उसकी गरीबी... उसका पेट... उसकी मेहनत... उसका सहयोग ...।

सब एक साथ सुहानी की आँखों में कौंध गए। उस घटना के बाद सुहानी डिलीवरी के बाद दुबारा स्टेशन पर उस बुजुर्ग कुली को खोजती रही मगर वो कभी दुबारा नही मिला।

आज वो जगह जगह दान आदि करती है मगर आज तक कोई भी दान वो कर्जा नहीं उतार पाया उस रात उस बुजुर्ग की कर्मठ हथेली ने किया था। सच है कुछ कर्ज कभी नही उतारे जा सकते।

ड्रायवर से दूरी

कभी आपको बस की सबसे पीछे वाली सीट पर बैठने का मौका लगा है। यदि नही; तो कभी गौर करना, और हाँ; तो आपने महसूस किया होगा कि पीछे की सीट पर धक्के ज्यादा महसूस होते है। चालक तो सबके लिए एक ही है। बस की गति भी समान है। फिर ऐसा क्यों ? साहब जिस बस में आप सफर कर रहे है उसके चालक से आपकी दूरी जितनी ज्यादा होगी - आपकी यात्रा में धक्के भी उतने ही ज्यादा होंगे।

आपकी जीवन यात्रा के सफर में भी जीवन की गाड़ी के चालक परमपिता से आपकी दूरी जितनी ज्यादा होगी आपको ज़िन्दगी में धक्के उतने ही ज्यादा खाने पड़ेंगे। अपनी रोज़ की दिनचर्या में यथासंभव कुछ समय अपने आराध्य के समीप बैठो और उनसे अपने मन की बात एकदम साफ शब्दों में कहो। आप स्वयं एक अप्रत्याशित चमत्कार महसूस करें।

Pavaan Vani

Dear Narayan Premiyo,

| | Narayan Narayan | |

Hearty congratulations to all of you on the first birthday of your beloved on-line Narayan Bhavan.

I would like to share my feelings about the Narayan Bhavan. When the proposal was put forward to the trust by the team, despite being a new idea, everyone agreed and as usual the team got engaged in the work. I had a firm belief that we will be successful because of the love and affection NRSP has been getting over a period of time. When Narayan Bhavan completed its first nine days, it was decided that the Bhavan (prayer room) should be extended till Hanuman Jayanti in view of the immense participation of the Satsangis. When the Bhavan was extended till Hanuman Jayanti, the Satsangis requested to prolong it for another 56 days. By the time the 56 days were over, seeing the support of the Satsangis and the benefits that the Narayan Bhavan Satsang would bring, the team with the family's support, decided to continue the Narayan Bhavan.

Initially the thought came how it will work like having two prayer sessions every day as compared to weekly satsang. Then an inner voice whispered - if there is a demand to continue this Bhavan again and again, I am feeling elated to continue the Bhavan, the super excited team is coming with new suggestions, then it is Narayan's wish because of which the Bhavan is functional.

The Brahma Muhurta session and the Afternoon session along with all the responsibilities have been feasible in the best of manner. I bow down again and again before Mother nature to choose me and my team for this good work. A belief was strengthened that if you honestly, give your 100% to any task, then nature returns it to you in multiples. Hearty congratulations to all of you on the first birthday of our beloved Narayan Bhawan and for the many more birthdays to come.

Rest fine

R. Modi

CO-EDITOR

Deepti Shukla 09869076902

EDITORIAL TEAM

Vidya Shastry 09821327562
Mona Rauka 09821502064

Main Office

Rajasthani Mandal Office, Basement Rajnigandha Building, Krishna Vatika Marg, Gokuldham, Goregaon (East), Mumbai - 400 063.

Editorial Office

Shreyas Bunglow No 70/74 Near Mangal Murti Hospital, Gorai link Road, Borivali (W) Mumbai -92.

Regional Office

Amravati - Tarulata Agarwal	:	9422855590
Ahmedaba - C. A. Jaiwini Shah	:	9712945552
Akola - Shobha Agarwal	:	9423102461
Agra - Anjana Mittal	:	9368028590
Baroda - Deepa Agarwal	:	9327784837
Bangalore - Shubhani Agarwal	:	9341402211
Bangalore - Kanishka Poddar	:	70455 89451
Bhilwada - Rekha Choudhary	:	8947036241
Basti - Poonam Gadia	:	9839582411
Bhandra - Geeta Sarda	:	9371323367
Banaras - Anita Bhalotia	:	9918388543
Delhi - Megha Gupta	:	9968696600
Delhi - Nisha Goyal	:	8851220632
Delhi - Minu Kaushal	:	9717650598
Dhulia - Kalpana Chourdia	:	9421822478
Dibrugadh - Nirmala Kedia	:	8454875517
Dhanbad - Vinita Dudhani	:	9431160611
Devria - Jyoti Chabria	:	7607004420
Gudgaon - Sheetal Sharma	:	9910997047
Gondia - Pooja Agarwal	:	9326811588
Gorakhpur - Savita Nalia	:	9807099210
Goa - Renu Chopra	:	9967790505
Gouhati - Sarla Lahoti	:	9435042637
Ghaziabad - Karuna Agarwal	:	9899026607
Hyderabad - Snehlata Kedia	:	9247819681
Indore - Dhanshree Shilakar	:	9324799502
Ichalkaranji - Jayprakash Goenka	:	9422043578
Jaipur - Sunita Sharma	:	9828405616
Jaipur - Priti Sharma	:	7792038373
Jalgaon - Kala Agarwal	:	9325038277
Kolkatta - Sweta Kedia	:	9831543533
Kolkatta - Sangita Chandak	:	9330701290
Khamgaon - Pradeep Garodia	:	8149738686
Kolhapur - Jayprakash Goenka	:	9422043578
Latur - Jyoti Butada	:	9657656991
Malegaon - Rekha Garaodia	:	9595659042
Malegaon - Aarti Choudhari	:	9673519641
Morbi - Kalpana Joshi	:	8469927279
Nagpur - Sudha Agarwal	:	9373101818
Navalgadh - Mamta Singodhia	:	9460844144
Nanded - Chanda Kabra	:	9422415436
Nashik - Sunita Agarwal	:	9892344435
Pune - Abha Choudhary	:	9373161261
Patna - Arvindkumar	:	9422126725
Pichhora - Smita Bhartia	:	9420068183
Raipur - Aditi Agarwal	:	7898588999
Ranchi - Anand Choudhary	:	9431115477
Ramgadh - Purvi Agrwal	:	9661515156
Surat - Ranjana Agrwal	:	9328199171
Sikar - Sarika Goyal	:	9462113527
Sikar - Sushma Agrwal	:	9320066700
Siligudi - Aakaksha Mundhda	:	9564025556
Sholapur - Suvarna Valdawa	:	9561414443
Udaipur - Gunvanti Goyal	:	9223563020
Vishakhapattanam - Manju Gupta	:	9848936660
Vijaywada - Kiran Zawar	:	9703933740
vatmal - Vandana Suchak	:	9325218899

International Office

Nepal - Richa Kedia	:	+977985-1132261
Australia - Ranjana Modi	:	+61470045681
Bangkok - Gayatri Agarwal	:	0066897604198
Canada - Pooja Anand	:	+14168547020
Dubai - Vimla Poddar	:	00971528371106
Sharjah - Shilpa Manjare	:	00971501752655
Jakarta - Apkesha Jogani	:	09324889800
London - C.A. Akshata Agarwal	:	00447828015548
Singapore - Pooja Agarwal	:	+659145 4445
America - Sneha Agarwal	:	+16147873341

|| 卐 ||

Dear Readers,

|| Narayan Narayan ||

Recently, Virtual Narayan Bhavan celebrated its first birthday. The enthusiasm of the Satsangis and the Bhavan team was palpable. During this whole year, many Satsangis learned many things from the discourses of Narayan Bhavan and adapted them in their life and made their life a seven star. We had set a target of 100 Satsangis and 9 days which today has been transformed into about 30 thousand families and an eternal Satsang.

So, Team Satyug thought why not to share the story of this wonderful, on-line Narayan Bhavan with our sincere readers.

Let us share the journey of the Narayan Bhavan in this issue of Satyug.

Best wishes for a Seven-star life.

Yours own,
Sandhya Gupta

To get
important message and information from NRSP Please Register yourself on 08369501979
Please Save this no. in your contact list so that you can get all official broadcast from NRSP

we are on net

narayanreikisatsangparivar@narayanreiki

Publisher **Narayan Reiki Satsang Parivar,**
Printer - **Shrirang Printers Pvt. Ltd.,** Mumbai.
Call : 022-67847777

॥卐॥

Call of Satyug

Raj Didi says that your thought process, the words you use, your life becomes like that. Our Narayan Bhavan is the perfect example of this principle of Rajdidi. An idea was sown, nurtured, took deep roots and made its place in the hearts of Satsangis. Narayan Bhawan has etched place in the hearts of the people around the world too on its first birthday on April 13th.

The story is very interesting. It was during the Lock down time. Prayers were being done at various places. In those circumstances, prayers done for a particular person showed their effect, then the idea came to the team that if online prayers could be done under the NRSP banner, it would be a noble thing. This idea was put forward to the Trustees and Didi, which was agreed upon and it was suggested that Narayan Bhawan should be started on the zoom for 100 people and only for nine nights(Navratri). In these nine days the core committee, trustees, center heads, Narayan Dham Volunteers and many Satsangis from India as well as abroad gave their services.

Everyone, from the elders to children gave their services. All got connected, like the In-laws, Friends, Pals, Helpers, Doctors, Engineers, Advocates, Management Gurus as well as Home Makers. Narayan Bhawan's prayers were like a celebration for everyone. Every house experienced a festive atmosphere. Thousands of people got associated with Brahma Muhurat and the afternoon prayers and while staying connected they performed their household responsibilities better, made relationships more cordial, gave more respect to the elders, apologized for their mistakes, and made commitments not to repeat their mistakes.

Along with the team, every Satasangi strengthened this bond with the passage of time. Everyone prays for the progress of Narayan Bhavan with body, mind and wealth.

Every day new suggestions come to the team, which are adopted by NRSP to make the Bhavan more beneficial. Rajdidi along with her team strive to make things better.

The idea of Bhavan was conceptualized, by keeping awake, the to- do list was made by the Core Committee, some handled the zoom, some invited specific people and in this manner the Narayan Bhavan was created. To make the life of the people Seven star in the presence of Raj Didi, Narayan Bhavan became a reality.

|| Narayan Narayan ||

Whatever Narayan Bhavan has provided is amazing, unforgettable, awesome and divine.

Narayan Reiki Satang Parivar emphasizes on harmonious relationships. A unique sadhana was told in the Narayan Bhavan by Raj Didi. Our relationships gain strength by positive use of thoughts, words and behaviour. Didi suggested to check our thoughts, speech, behavior every hour and see that- Were we the reason of smile on the faces of people or whether we were the reason of disappearance of smile on people's faces. If we were the reason for the smile on someone's face, we will give green star to ourselves and give red star if we were the reason of disappearance of smile. Continuously try to increase the number of green stars in your life. For this, you have to keep your thoughts, words and behaviour positive. Remember that the smile on someone's face disappears due to the tone in which words are expressed. This technique of **checking hourly** will bring you easily in the category of an ideal human being. A very simple solution to erase negativity from life was told by didi in the Narayan Bhavan is **Finger Sadhana**. In this technique you have to pray to Narayana that all your inner negativity has gone out and you have been filled with positive energy by holding every single finger, doing Savamani (Ram Ram 108 and Ram Ram 21) for each finger while sitting at a place. But if you are sitting in a group or during the Narayan Bhavan sessions, then you can do Ram-Ram 21 by intertwining the fingers of both hands. Adding to it Raj Didi taught the process of **traditional prostration (Dandavat Pranam)**. Didi says that when we bow to the mother Earth, Mother Earth absorbs the negativity within us, and the flow of positive energy begins. Similarly, when we do salutation to the elders of the house, the elderly shower blessings and due to this our life becomes full of seven types of happiness. Didi says that parents are living Gods on this earth. They are fortunate who get the opportunity to serve their parents.

Another technique advised in the Narayan Bhavan for reforming relationships was - **Plant Sadhana.**

Didi advised to take a plant, especially Tulsi plant is the best. Give a name to that plant. Make it your friend. This will act as your courier. If you want to give a message to a person whom you cannot tell directly, then tell this plant friend to give your message to that person. Satsangis adopted this technique and reaped a lot of

benefits. In this regard, Didi advised to adopt **humility and to adopt humility easily in life, a Symbol** was also given in the Bhavan. Many people shared that they have embraced humility for which they got the appreciation from their family. It helped in betterment of relationships and opened the path to progress, growth, success. An Era of **Confession and Commitment** began in the house. On one hand, people confessed their mistakes in the presence of thousands, while on the other hand, they took the commitment not to repeat those mistakes. At the same time, they chanted and prayed for the happiness, peace, prosperity, and good health of the people they had offended. Satsangis took chanting and penance for the fulfilment of their wishes. People left their favorite foods, and a few took various other type of commitments. It had dual benefits, as along with the fulfilment of their wish their health too improved. **Confession and forgiveness process** gave mental strength to the people. A single confession inspired thousands to accept their mistakes and to improve them. **The samriddhi Sadhana,** which is done every Sunday has helped in the progress of trade. Many got new jobs with the choicest packages. Many got back the money deposits and routes to prosperity in life opened. By means of **Karmic healing,** the karmic accounts were balanced which opened the path to growth, progress and success. Many weddings were solemnized, many women became pregnant, lot of pending works were accomplished. The sadhana by Rajdidi for the development of good habits gave good results by erasing the negative habits among children. Didi suggested the **savings of electricity and water,** which brought down the bills from millions to thousands. The easy technique to make water Sanjivani booty gave and is giving enormous health benefits. By giving the symbols like **Narayan Kavach, Lakshman Rekha, Vinamrata , commitment and Shakti Symbol,** the lives of Satsangis got filled with divine gifts. We bow to this amazing, unforgettable, Eternal Narayan Bhawan, which showed a new way to the people. We salute from the depths of our heart to the people who gave their services at all times in Narayan Bhawan. Gratitude to all the people who participate in Narayan Bhawan prayers every day. Thanks to Raj Didi and NRSP who have made history and haveplayed a great role in the creation of an ideal society, which is a reinoculation of Satyug.

Wisdom Box
(Glimpses of Satsang)

|| 卐 ||

Wisdom Box is a pillar through which we convey Didi's messages to the readers. Ever since the on-line prayers at Narayan Bhavan have started, we bring to readers a selection of stories from the Treasures of the Narayan Reiki Satsang family. Here are some such pearls of wisdom selected through different characters: -

Story of Vijayalakshmi :-

Didi shared some tips through Vijayalakshmi who was praying for her brother:

1) If even one member of the house is unwell, then we are not able to sleep peacefully.

2) If we have slept peacefully all night, it does not only mean that he has gifted us a good sleep, but it also means that he has taken care of our family members, provided them security. That is why we have slept peacefully, otherwise how can we sleep comfortably?

3) The matter does not stop here, if our neighbors and relatives also have any problem, then also it affects our sleep. So, imagine how much he has to take care so that we can sleep peacefully. How many have to be protected? Our family members, our loved ones, our relatives.

Wake up in the morning and at least thank him for the sweet sleep that you are gifted by him.

Vijayalakshmi says," we have taken many things in our life for granted. He has also kept the water still to give us peace of mind. It becomes our duty to thank him for the comforts he has given. when you wake up, say, "Narayana thank you for giving good sleep"

Second Thanks for giving a new day. And at the same time, request the divine to give you so much power and strength that you can utilize each and every minute and each and every particle given to you. When you do this, you will get excellent results.

The prayer " I thank Narayan for always being with us because of which today is the best day of our life, filled with love, respect, faith care appreciation, success and jackpots.This prayer will change your life, definitely. Before sleeping at night say two lines and see its miracles in seven days. Before going to sleep at night say, 'Thank you, Narayan, for giving us the boon of being healthy forever, because of which we are absolutely healthy, healthy, healthy.

This thought will go into your subconscious mind and will release such chemicals that you will always stay healthy. When you pray it creates a protective shield around your aura and it protects you from negative waves. The prayers will bring transformation in your aura day by day.

Context of King Drupada: -

King Drupadawanted to get his daughter married Draupadi.

He Announced the wedding and held a competition, the one who wins the

competitionwould marry his daughter Draupadi. Many princes wished to marry Draupadi. The competition was to shoot an arrow by looking at the eyes of the fish down in the water, though the fish was hanging on a pole and moving around. On the first day of the competition, Lord Krishna told Arjuna. As you approach the competition site, move slowly and keep all your attention on the eyes of the fish. Arjuna spoke hurriedly without listening to Krishna's full talk. 'If I will do everything, what will you do?' Lord Shri Krishna humbly replied, 'What you cannot do'. ' God can do'? 'You cannot hold the water still'.

Meera's story:-

We get so many opportunities in our life to help others. It is up to us how many such golden opportunities we avail it is not that we can help someone by giving money, even If Someone shared something with you ,you listened and expressed sympathy, this is also a help. Someone has done some good work, even if it is small, you appreciated it, it is also some help. Being the reason for someone's smile is also a help.

Barack Obama's once said,

'If you are sad, get up, go out of the house, donot wait for someone to help you, go and help others then you will feel good. Fill this world with joy, you will automatically be filled with joy. When the thought of helping comes in your mind, you will feel that positive waves start flowing in the body and they attract prosperity. If your own aura is weak then connect to someone with strong aura. The thread itself does not have the power to become a Garland, but when flowers are threaded in it, it becomes a Garland for God. Do good deeds and make your aura strong. You will attract all the good things in your life.

Story of Shri Gautam Buddha

Lord Buddha said that you cannot remove negativity by negative thoughts and behaviour. Negative thoughts and negative behaviors lead to negative consequences. Good thoughts and good deeds give positive results. Didi explained that negative energy resides within us in various forms like anger, condemnation, but out of all these jealousy, malice, ego are the most negative and very sharp energy, it can destroy our aura. It damages aura beyond repair.

Story of a Teacher

Didi narrated a true-life incident. A woman who was a teacher went to Didi for

|| 卐 ||

counseling of her 11-year-old daughter. The woman shared with Didi, that she was a teacher in the school and wanted her daughter to concentrate on studies sincerely. The woman told that despite all the efforts and proper care, her daughter is becoming more careless, irresponsible, and stubborn. Didi asked how many members were there in her family, the woman said that her husband, her daughter, and her mother-in-law live with her. Didi enquired about her relationship with her mother-in-law, the woman immediately said that she could not stand her mother-in-law, she was very much irritated by her. Didi explains to her that her negative energy towards her mother-in-law is showing an effect on her daughter and is forcing her to behave negatively towards everyone. Didi asked her to express love and take care of her mother-in-law. Didi told her that as soon as she wakes up she has to visualize her mother-in-law on her mental screen and tell her ,'I love you, I like you, I respect you'. Narayan bless you with happiness, peace, health, prosperity, love, respect, respect, faith, care". Say it seven times and repeat the same process before sleeping at night. The woman followed this process faithfully under the guidance of Didi, her attitude towards her mother-in-law became positive. Her daughter's behavior improved. The lady was a teacher and didi asked her to give her best to her students. The lady taught her students with utmost sincerity and dedication and the result was her own daughter topped the class.

One More Story :-

A woman's four-year-old son was very aggressive, hitting and biting his classmates. While talking to his mother, Didi came to know that she was not on good terms with her sister-in-law. Didi asked her to recall that whenever she was jealous or irritated with her sister-in-law, does the son behave aggressively in school at the same time. The woman said, yes whenever she was jealous of her sister-in-law the same day her son behaved negatively in school. Didi taught her the same process of visualizing her sister-in-law on the mental screen and sending happiness, peace, prosperity love, respect, trust, care and blessings. The woman practiced it for seven days and reported that her son's behavior had improved significantly.

Didi said that people with whom you are annoyed or angry are not affected, but your own aura is affected, it gets damaged and good things take away from you.

Didi explained that we should be nice to the people we live with. If we have any negative feeling towards them in our mind, then visualize it and practice the above process of blessings.

Because this negativity will not let you move forward in life. When you bless that person with happiness, peace, prosperity and love, respect, trust, care, you will also attract him in multiples.

|| Narayan Narayan ||

॥卐॥

Youth Desk

On 13th April, we Celebrated the first birthday of Narayan Bhavan. The establishment of Virtual Narayan Bhavan proved to be a blessing in disguise. It was as if everyone's dream came true. Satsangis from India and abroad had always wanted to have the company of Rajdidi and listen to her Satsang. In normal times, it happened but not very often. With the online Satsang, not only NRSP Satsangis but people from world over are joining and benefiting from daily prayers with Rajdidi. The prime credit goes to Rajdidi's vision of Satyug that is every person becomes positive in thoughts, words and deeds. But to make it a reality, Team Radiant stars have been instrumental in every manner along with the Zoom and YouTube.

It is a general thinking that today's youth is getting spoilt due to the exposure to technology, but the truth is that it all depends on the individual how he or she utilize the technology.

It can be very well understood by the example of potter who makes both the pitcher and chilam. A pitcher filled with cool water quenches the thirst of parched throats whereas a chilam is an addiction which is carcinogenic. Our Radiant stars have used the modern technology for the propagation of values advocated by Rajdidi. Be it the handling of Zoom link, YouTube, making of videos, creating and editing the slides their work goes on round the clock.

What began with a small team has inspired many more to join this vision. Narayan Bhavan has taught a lot of values to the people world around of which a few can be counted on tips-

Time management

Dedication

Perseverance

Creativity

Team spirit

Mutual love, respect, faith, care and togetherness.

Leadership and Mentorship

Revival and importance of age old customs.

Once these qualities are ingrained in today's youth, their progeny's will automatically nurture them and in this manner the future world order will be bright

and marvelous. The best example of youth giving meaningful direction to Valentine Day is the manner in which they celebrated as love week.

Love Week:

7 Feb - Thanks to Sweepers/ cleanliness people - giving them gift or card .

8 Feb - Food donation Drive

9 Feb - Plantation Drive

10 Feb - Food donation Drive for Animals

11 Feb - Donating Study material to needy children.

12 Feb - Visit to Orphanage/Old Age home

13 Feb - Talk By Didi about actual meaning of love that is care.

14 Feb - Gratitude to parents / Mata Pita , Guru.

From the beginning that is 13 April 2021 to till date the Radiant stars have been instrumental in running of Narayan Bhavan. Their wholesome contribution in spreading Rajdidi's message to the world is phenomenal and the team of Satyug salutes them for it.

Narayan divine blessings to RanjitaMalpani, earning Jackpot amount in multiples of Rs. 56 crores from tuition classes and investments in stock market

Children's Desk

One year of 24/7 prayer room- An awesome feat. So, when it was decided that this month's Satyug would be dedicated to the achievements of Narayan Bhavan, the team was very happy.

A small idea created a milestone.

All those who visit the online prayer room have definitely have a common sharing of expressing gratitude to the divine prayer room. When the bhavan was started, it was created to give solace and guidance to many. Many of our young sparkling stars took this opportunity to pray for their parents who were in isolation. The initial days was mainly dedicated to prayers because that was the need of the hour. In the initial days when the team used to unmute the participants, so that they could chant Ram Ram 21, it was a race by everyone to be in focus so that they could be unmuted. Sparkling stars took initiative by helping parents and elderly at home to join the zoom, to raise hands and to chant Ram Ram 21. They were accumulating good karmas.

Then came scheduled prayers, and again sparkling stars contributed by small ideas of explaining mudras, yoga asanas, being useful at home etc. The lockdown period was a period of intellectual growth too. Many new ideas were shared by the sparkling stars in the bhavan, and it inspired many to join the course- Foundation to success.

Then came the period of confession and commitment and again sparkling stars took lead by doing both, confession and commitment and abiding by it. It was heartwarming when eight-year-old owned up that he was disobedient or told lies and took a commitment to follow the right path. It was even more a proud moment when parents came on screen and shared those children were instrumental in the positive ambience at home.

Credit goes to the Narayan bhavan for the success of the online sparkling star course also. Children all over the World did the course- foundation to success under single online platform. Divided by boundaries but united by Narayan bhavan and the one thought of Vasudeva kutumbh with all the golden values people are living a seven-star life. It has been an awesome feat, a year well spent.

Prayers to Narayan that this Narayan bhavan continues to motivate, inspire and be a mandatory part of our lives.

Under The Guidance of Rajdidi

The sharing of Ashish ji that he was very sincerely praying for Team India (Women) yet they lost, stirred the thought that when we pray for self, we work on our vichar, vani and vyvhar to be positive and resultant get the desired results, but when we pray for others, when we pray for a team their behaviour their character, their sincerity all of that matters. Parents pray for the success of their wards, for their marriagebut when things takes time and they feel low, instead they check should the Vichar Vani Vyvhar (thoughts, words and behaviour)of those whom they pray for. The success of the Narayan bhavan is because of the Kripa of Narayan, blessings of our Guru Rajdidi and the positivity of the entire Bhavan team, The NRSP Core team and its trustees and its selfless volunteer team (The Narayandham). The beauty of this teamwork is every person gives his/her best with the sole intention, focus that NRSP's ideals and principles should spread far and wide and every person lives his entitled seven-star life. Each person in the team follows Rajdidi's ideals and principles to the T. In fact, we can proudly say they eat NRSP, they sleep NRSP, they Live NRSP, their existence is growth and progress of NRSP. It is because of this teamwork that this online prayer room celebrates its first birthday with the surety that many more will come. A few sharings :-

Priyanka Pant :- Narayan Narayan. I am a 32 year old radiant star working as Assistant Manager with a public sector bank and my husband working in Income tax department. I have a jackpot sharing.

My colleague based in Delhi got divorced just after a year of her wedding in 2017. After that we along with her family were searching a suitable match for her since then. We made her profiles in Jeevansathi too but could not get success. After that I found NRSP in November 2021 and started karmic healing for marriage for her. And I took the tap (penance)of notcriticizing my boss whatever is the situation because in food I already eat very limited and did not have any food addiction. So,I took this तप of not criticizing anyone specially my boss. And to our utter surprise we found a suitable boy for her within a month of that karmic healing. The boy and his family have accepted my friend with open heart and with her past too. The boy has exactly the same qualities as Rajdidi says in healing. Aapkaaseemaseemdhanyawad

And whenever anyone behaved rudely, I said I love u, I like u and Irespect u rather than creating any negative thought in my mind. And these words are magic. I

request everyone to just keep these three words in mind and your life will totally change upside down in a positive.

I am very positive, and my house and workplace environment has totally changed and is in my favor.

Aap ka aseem aseem dhanyawaa ddidi

Ujwalla Kale :- Narayan Narayan, Pranam to you didi.Pranam to the entire NRSP team and lots of thanks.

Didi 18-20 years ago I had this ego that my mind is very strong. Even if something happens in my life, I will not feel anything. Even if something happens to my only daughter, I will not feel anything.

The result was such that after two years, my daughter got a little disturbed. It caused a lot of trouble to everyone in the house. In these 18 years, she used to get a little disturbed in between. Today she is MS in computer science and is doing job in a good company abroad, but anxiety surrounds her in between. Her progress in the office has become Narayan Narayan. Today she is 28 years old. We are looking for a boy for her marriage for 3 years.

Didi I have been regularly attending your satsang on YouTube for the past 10 months. The situation my daughter is facing is my own fault, Narayan just reminded me that. Thank you very much Narayan. Didi please get me forgivenessin the Narayan bhavan. Since the 1st day of joining you, I am following all your words and I have inspired others to join others too. 7 to 8 relatives are also doing satsang regularly.

Narayan divine blessings with Narayan shakti to Ajita Khanna for Good Health and a seven-star life

Narayan blessings with Narayan shakti to Santosh Ladha and LaxmikantLadha on their wedding anniversary (23rd May) for a seven-star life and success in all spheres.

One Belief

My daughter's wedding was scheduled, due to which I had taken leave to see the arrangements of the wedding. That day, when I came homeafter attending some work my wife handed over an envelope to me. The envelope seemed anonymous but seeing the sender's name, I was astonished and curious to know. "Amar Vishwas", a name with whom many years had passed since I hadany contact. I opened the envelope and in it there was a one Lakh Dollars cheque and a letter. Such a big amount in my name. I immediately opened the letter and read it in one breadth. The letter was like a fairy tale.The letter began as,

Respected Sir, I am gifting you a small gift. I don't think that I can ever repay the obligations done by you. This gift for my unseen sister. Greetings to everyone at home.

Your Amar.

Before my eyes, played a scene from yesteryears,like a picture. One day, while strolling along the streets of Kolkata, I was randomly seeing the magazines and that's when, I saw a boy standing near the books. The boy was trying to interact with every elite person entering the book store and after getting no response from them, he used to return back to his place. I was observing this for a very long time. On the onset, I saw the reaction on the face of all the vendor's as an ordinary one but the reaction of disappointment on this boy's face wasn't ordinary. He tried many times keeping high expectations and then again experienced disappointment. After watching him for some time, I couldn't curtail my curiosity and went and stood near that boy. The boy was selling ordinary books pertaining to science. On seeing me, with renewed energy he started selling the books with high expectations and he started showing me the books. With total focus now I observed the boy. Fully cleaned face, looking confident but his clothes were quite ordinary. It was winter season and he was wearing a very light sweater. The Books were of no use to me but then too I asked, "Child. How much for all these books?

"How much can you give sir?"

"You must have thought something right?"

"Whatever you can give," the boy said a little disappointed.

"How much do you want?" The boy nowunderstood that I was just spending

some time with him.

"Rs.5000," said the boy in a bitter tone."

"If anybody would give Rs. 500 for these books, that would be also more."

I did not want to disappoint the boy but spontaneously I had spoken.

Now it was quite interesting to see the boy's face.

Like a collection of disappointment has been smeared all over his face.

I started repenting on what I had said.

I kept my one hand on his shoulder and asked him in a consoling manner, "See child, I don't see you as a bookseller, what is the issue? – Tell clearly what you need?" That boy started crying. Probably years of disappointment had surpassed the limit. "Sir, I have done 10+2. My father works in a very small restaurant. I have been selected in medicalentrace. Now I need money to enter it. My father is ready to give some amount, but he is unable to arrange for the rest ." The boy said this in English in just one breadth.

What is your name? I asked him, in a mesmerized manner.

"Amar Vishwas."

"You name defines **Belief** and you are getting disappointed."

How much money do you need?

"Rs.5, 000". Now it was in a very polite tone.

"If I give you this money, will you repay me back? The value of these books are not much."

"Sir. You only told that I am belief."

"You can believe me. I am coming here from past 4 days, you are the first one, who has asked me so much. If arrangement of money cannot be done, then I too will be washing cups in some hotel."

His tone underlined his slipping future.

What was there in his tone I don't know but I made my mind to help him. My brain was not ready to accept that he was not a fraudster whereas my heart was ready to accept what he was saying. Finally, my heart won.

I gave him Rs.5000 from purse which I had thought to invest in the share market. Though the money was very valuable for me too, I don't know why I handed it over to him.

"See son, I am not aware that how much should I believe in your words, but my heart says to help you, so I am doing the same. I have a daughter, "Mini" who is 4-5

years younger to you, I had thought to buy some toy for her." I said this while handing over the money to him. Amar was bewildered. Maybe he was not able to believe it, he had tears in his eyes.

He touched my feet, two drops of tears from his eyes fell at my feet.

"Can, I keep these books in your vehicle?

"No need. Keep them with you. This is my card, whenever you need me, do connect with me."

He kept standing like astatue, I tapped his back, started the car, and drove away.

While driving the car, the situation was spinningin my head, and I was thinking about how I had gambledwherein so much of uncertainty was involved.

If someone else would hearabout it, he would call me an emotional fool.

Hence, I thought not to talkabout this incident to anyone. Days passed. Amar wrote a letter to me sharing about his admission in medical college. I could see some humanity in my foolishness. An unknown power or a person sitting inside heart, gave me an inspiration to send Rs.2000 to him again.

My feelings won and again I repeated my foolishness. Days passed like winds. He used to write brief letters which had 4 lines,2 lines for me, 1 about his studies and another for Mini, whom he used to call his sister."

I used to repeat this foolishness once and again and then again forget. I never made an effort to go to him and check the usage of my money. I felt proud on my foolishness without knowing the truth of his letter.

This sequencewent on for a few years. Then one day I received a letter that he was going toAustralia for higher education.He explained about the scholarship he got but even then, he did not fail to enquire about Mini. Again, I felt proud about my act foolishness.

Time flew by. Amar sent his wedding card. He was mostly planning to settle in Australia. Mini had also completed her studies. Her marriage got fixed in a very big family. Now, I wanted to do the wedding of Mini according to the status of the Groom's family. A big officer of a government agency is like a lion only on papers. I had sent one wedding card to Amar too. It was then this cheque came.

The hustle and bustle of wedding was on. I and my wife were busy in the arrangements and Mini was busy with her friends. One big car came and stopped in the porch. Like For the elite the driver opens the car door, likewise the driver jumped to open the car door and along with the man his wife came out and she had a small

baby. I was standing at the door and was remembering that I had seen this person somewhere else too.

He came and touched my and my wife's feet and said, "Sir. I'm Amar..." He said it with full devotion. My wife was standing mesmerized. I hugged him very proudly. His sonwas very comfortable in my wife's lap. Mini was still in doubt. Amar had bought many gifts with him. He hugged Mini very intimately. Mini was very happy on getting a brother. Amar did all the rituals which elder brothers have to do in the marriage. Neither did he put any big responsibility on me, nor did he allow me to incur any expense. His stay in India, flew like a bird.

This time when he went back to Australia, for seeing him off at the airport it was not just me but even my wife and she had tears in her eyes. As the aircraft started touched the sky, my belief too started touching it. I was again proud on my foolishness, and was thinking that to operate this world, there is this God and our belief.

A beautiful loan

Two years had passed since her wedding, and Suhani was heading to her home in Punjab becausenow she was Pregnant. Her husband used to stay away from the city. The train had to come onplatform no 5. Suhani was in her seventh month. Because of excessive luggage, she had arranged a Coolie. Very old and thin, it was quite obvious to make his ends met, he was doing this work. Imploringly, he was onto removing the luggage. Suhani fixed him for Rs, 15 and sat comfortably. It was announced that the train will arrive in the platform after 1.5 hours. Nearly after 1.5 hours there was an announcement of the train but that old coolie was nowhere to be seen. No other coolie was visible. It was not possible to reach home, even if shemissed the train as it was past midnight 12:30 pm. Suhani started getting worried, then that old person came running from outside. He said, "Don't worry daughter, I will settle you in the train." Due to running, he started breathing very heavily. He immediately picked up the luggage and gave an indication to move forward with him. As the train had suddenly changed its platform to platform 9, one had to climb the stairs and cross the bridge.. Due to his heavy breathing, he

was walking slowly and also Suhani also wasn't in a position to walk fast. The train gave its departing whistle. Running they found their sleeper compartment of sleeper class. The compartment was near the engine after the completion of the platform. There were no platform lights and it was quite difficult to walk. Suhani climbed the train after ensuring that the coolie followed. But the train had started to move. The coolie also was now running andwith great efforts managed to keep the luggage at the entrance of the compartment. It was fully dark, and Suhani with shiveringhands, removed the note of Rs.10 and Rs. 5. The coolie spread his hands to take the money, but the train had accelerated. His palms were far off Suhani's hands and the train was running fast. Last Suhani saw him standing in Namaste position and blessings her.

His poverty,His stomach,His hard work, and his support.

All this flashed in front of Suhani's eyes. After that situation and her delivery, Suhani went back again to the station to find out about that old Coolie, but she couldn't find him. Today presently Suhani has been donating in different places, but till now she couldn't repay the debt of the old coolie back that night when his palms acted in a diligent manner.

It's true, one can never repay some loans.

Distance from the Driver

Have you ever had a chance to sit in the back seat of a bus? If not; pay attention. And if yes; you must have felt that the bumps are felt more in the back seat. The driver is the same for everyone. The speed of the bus is also the same. Then why? Sir, the greater your distance from the driver of the bus in which you are traveling - the more willthe bumps in your journey.

Even in the journey of your life, the greater your distance from the Supreme Father, the driver of the vehicle of life, the more you will have to face the bumps of life. Make a schedule in your daily routine to sit for some time close to the divine entity you worship and speak yourheart out to him.You will experience unexpected miracles.

Golden Six

1) Prayer -Thank you Narayan for always being with us because of which today is the best day of our life filled with abundance of love, respect, faith care, appreciation, good news and jackpots . Thank you Narayan, for blessing us with infinite peace and energy. Narayan, Thank you for blessing us with abundant wealth which we utilize. We are lucky and blessed. With your blessings, Narayan, every person, place, thing, situation, circumstances, environment, wealth, time, transport, horoscope and everything associated with us is favourable to us. We are lucky and blessed .Thank you Narayan for granting us the boon of lifelong good health because of which we are absolutely healthy. Thank you Narayan with your blessings we are peaceful and joyous, we are positive in thoughts, words and deeds and we are successful in all spheres of life. Narayan dhanyawad.

2) Energize Vaults - Visualize a rectangular drawer in which you store your money. Visualize Rs 2000 notes stacked in a row, followed by Rs 500/- , Rs100/- , Rs 50/-, Rs20/- Rs10/- and a silver bowl with various denomination of coins. Now address the locker 'You are lucky, the wealth kept in you prospers day by day.' Request the notes "Whenever you go to somebody fulfill their requirements, bring prosperity to them and come back to me in multiples." Now say the Narayan mantra, "I love you, I like you, I respect you, Narayan Bless you" and chant Ram Ram 56

3) Shanti Kalash Meditation – Visualize a Shanti Kalash (Peace Pot) above your crown chakra. Chant the mantra" Thank You Narayan, with your blessing I am filled with infinite peace, infinite peace, infinite peace. Repeat this mantra 14 times."

4) Value Addition - Add value to cash and kind (even food items) you give to others by saying Narayan Narayan or by saying the Narayan mantra.

5) Energize Dining Table/ Office table - Visualize the dining table/ office table and energize it with Shanti symbol, LRFC Carpet, Cho Ku Rei and Lucky symbol. Give the message that all that is kept on the table turns into Sanjeevini.

6) Sun Rays Meditation - Visualize that the sun rays entering your house is bringing happiness, peace, prosperity, growth, joy, bliss, enthusiasm and health sanjeevini. Also visualize your wishes materializing. This process has to be visualized for 5 minutes.

Finest Pure Veg Hotels & Resorts

The Byke
A HOTEL RETREAT
EAT GREEN • STAY EVERGREEN

Our Hotels : Matheran | Goa | Manali | Jaipur | Thane | Puri | UPCOMING BORIVALI (Mumbai)

THE BYKE HOSPITALITY LIMITED
Shree Shakambhari Corporate Park,Plot No.156-158,
Chakravati Ashok Complex, J.B.Nagar, Andheri (East), Mumbai - 400099.
T.: +91 22 67079666 | E.: sales@thebyke.com | W.: www.thebyke.com